माधवविलास ॥

जिसमें

शृंगाररसान्तर्गत स्वकीया परकीया मध्या प्रगल्भादि अष्टनायका भेद उत्तमोत्तम कवियों के अनुप्राससे सुन्दर मधुर व लालित्य कवित्तों में नवीन रीति से वर्णितहैं ॥

जिसको

श्रीरायबरेलीप्रदेशान्तर्गत मिश्रखेड़ा ग्रामनिवासि श्री माधवप्रसाद त्रिपाठी ने रसिक पुरुषों के अनुरागार्थ व अवलोकनार्थ निर्मित किया ॥

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी

अक्टूबर सन् १८८८ ई०

पहलीबार १५००

इसयन्त्रालय में जो काव्य की पुस्तकें छपीहैं उनमेंसे कुछ नोचेलिखीहैं

काव्य ॥

नानार्थनवसंग्रहावली ॥

पण्डित मातादीन शुक्ल रचित सातपोथीका संग्रहहै (१) संग्रहावली (२) रामायणमाला (३) रामायणगीताष्टक (४) ज्ञानदोहावली (५) रसधारिणी (६) तिथिबोध (७) मातृदत्तकृत पिंगल अत्तर बहुत पुष्टहैं कि बृद्ध और बालक भी पढ़ सक्तेहैं ॥

कृष्णप्रिया ॥

मंगलीप्रसाद विरचित ब्रजविलासकी तरहपर श्रीकृष्णजीका जन्मसे बैकुण्ठ गमन पर्य्यन्त चरित्रहै यह काव्यालंकार युक्त बहुतही सुन्दर पुस्तकहै ॥

छन्दोर्णव पिंगल ॥

जिसमें मात्रा वृत्त, वर्णवृत्त, मेरु, मर्कटी, पताका, लघुगुरुस्थापन रीति और सब छन्दोंके दृष्टांत सहित छपेहैं ॥

रसराज ॥

मतिरामजी कविरचित जिसमें अति मनोहरता से काव्यालंकार संयुक्त नायका भेदका वर्णनहै ॥

कविकुलकल्पतरु ॥

भूषण चिन्तामणिजी रचित जिसमें अतिरुचिर छन्दोंमें नायकाभेद की पूरी बातें लिखीहैं ॥

शतशयीसटीक बिहारीलालजी रचित ॥

श्रीकृष्ण राधाजीके विषयमें सम्पूर्ण नायका भेद का वर्णन सात सौ दोहोंमें है और दोहेके भावार्थ के सवैये और कवित्व भी हैं ॥

सभाविलास ॥

जिसमें सभाकी चातुरता के लिये चुनीहुई बातें जैसेनीति, पहेली काव्यकी बहुतसी बातें रागोंकेस्वरूप वर्णन कियेगयेहैं यह पुस्तक असंख्य छोछपीहै और पाठशालाओंके प्रचारके योग्यहै ॥



माधवबिलास ॥

——✻——

दोहा ॥

श्रीगणपतिकेचरणयुग शारदचरणमनाय ।
करोकृपा जनजानिकै दीजै ग्रन्थ बनाय ॥
बहुतकबिनकोमतोलै संग्रहकियोकबित्त ।
जाहिपढ़े आनंद अति होतिचतुरई चित्त ॥
लिखत आपनोबंश अरु ग्रासनासकुलजौन ।
तापीछे संग्रह लिखत पढ़ैंमुदितनर तौन ।

कबित्त । अवधकोसूबा तीनिलोकमेंबिदिततहां राय
कीबरेली जिलासुभगगनाइये । भागीरथी सातकोश
दक्षिण बिराजैं जाके नामलेत पातक अनेकन बहा-
इये ॥ माधव कहत तहां ग्राममिश्रखेर बसै चारिउब-
रण निज निज मनभाइये । तहां ममबास ताके करत
प्रकाश शम्भुशंकरकी आशसदा मन बच काइये १
प्रथम त्रिपाठी लालमणिभे बिदित जाके ताकेतनैराम-
दीन सबजग जानेहै । ताकेसुत द्वैभयेप्रसिद्ध बेचूलाल

जाको वैद्यनमें नामसब कोविद बखानेहैं ॥ माधवप्र-
सादभये दूसरे पढ़तभाषा व्याकरण ज्योतिषअनेकमन
मानेहै । संग्रह कवित्त निजमति अनुसारकरि चूक
क्षमैं कविजन जाको यहवानेहै २ प्रथम गणेशजीके
पुनि अम्बरानिनके चारि फिरि लिखेमाघ पंचमीब-
सन्तके । चारि लिखे फागुन के चारिही बसन्तऋतु
चारि ऋतुग्रीषम के बरषा सुतन्तके ॥ माधव कहत
चारि शरद बखानकीन्हे चारिही हिमन्त चारिशि-
शिरसुगन्तके । यहिविधि षटऋतु करिकै यकत्रजामें
पढ़ें सबकवि उर आनँद लसन्त के ३ सम्बत बखानौं
शून्य वेद गृह लग्न अरु भादोंकृष्णपक्ष अष्टमीको शुभ
जानिकै । संग्रह अरम्भकरो तादिन पढ़नकाज कवित
अमित सतकविनके आनिकै ॥ माधव विलास नाम
करिकै प्रकाश याहि नवरस नायकादि दशहू बखा-
निकै । आनँद बढ़ावनहै मोद उपजावनहै कविमनभा-
वनहैसुन्दर प्रमानिकै ४ ॥ दोहा ॥ जिमिबरणेसबक-
बिनमिलि सकल नायका भेद । सोईरीति संग्रहकरत
छांड़ि सकलचितखेद ॥ कवित्त गणेश ॥ बालकमृणालनि
ज्यों तोड़िडारै सबकाल कठिन कराल वे अकालदीह
दुःखको । विपति हरतहठि पदमके पातसम पंकज्यों
पताल पेलि पठवै कलुषको ॥ दूरिके कलंकअंकभव
शीशशशिसम राखतहै केशोदास दासकेवपुषको । सां-
करेकी सांकरन सनमुख होतहीते दशमुखमुखजोवैगज
मुखमुखको १ एकई रदन गजबदन बिराजमान मदन

कदन सुत करन सोकामाको। कहै गिरिधारी गिरि-
राजनन्दिनीकोनन्द आनँदकोकंदजगबंदबरनामाको॥
शुण्डादण्डकुण्डली कमण्डलीकोमोहै मन भालचन्द
मण्डली बिशाल गुणग्रामाको। ऐसे गणनायक के बु-
द्धिबरदायकके पांयबन्दि कहत चरित्र श्यामश्यामा
के २ सत्वसत्ययुगकोकि सत्यहीकि सत्यशुभ सिद्धि
की प्रसिद्धि कैधौं बुद्धिवृद्धि जानिये। ज्ञानहीकीगरि
माकी महिमा बिबेक की कि दरशनही को दरशन
उर आनिये॥ पुण्यको प्रकाश वेदविद्या को बिलास
कैधौं यशकोप्रकाश केशौदास उरआनिये। मदनक-
दनसुत बदन रदनकैसो बिघन बिनाशनकोविधिपहिं-
चानिये ३ बारन बदनसोहै एकही रदनजाके सुखमा
सदन सोसहाय कर सत्यके। दारिद दहन सुरतरु को
गहनऐसो मूषक बहन बिदहन खलमतिके॥ सबसुख
सागर गुणागर उजागर है बुधिबर नागर देवैया
शुभगतिके। बिमलकरन ज्ञान ध्यानधरि शिवनाथ
संकट हरण ये चरण गणपतिके ४॥ कवित्तभगवती॥ बा-
नी जगरानीकी उदारता बखानीजाय ऐसीमति उदित
उदार कौनकी भई। देवता प्रसिद्ध सिद्ध ऋषिराज
तपवृद्धि कहिकहि हारे सब कहिना कहूं लई॥ भावी
भूत वर्त्तमान जगत बखानत है केशोदास कहैना बखा
निकाहूपैगई। भनैपति चारिमुख पूतभनैपांचमुख ना-
तीभनै षटमुख तदपि नईनई १ मलयज गाराकैं ब-
सन सुधाराकैं गुहिउरडाराकैं लरैमुक्तानकी। पां-

वड़ेपसाराकरैं पंखाचौरढाराकरैं छाहैंविस्ताराकरैं विश्वदबितानकी ॥ सुखको निहाराकरैं दुखकोबिसाराकरैं मनसा इशाराकरैं सारा अँखियानकी। माणिकप्रदीपन सों थारा साजि ताराजूकी आरती उताराकरैं दारा देवतानकी २ जहां अम्बु आसनवृषासन खगासन गणेश शेश आसन सिंहासन तरेरहैं। तापर स्वरूपहै अनन्त ब्रह्म रूपणीको चंद ह्वै बितान छांह शीशपै करे रहैं॥ श्रीपति सुजानकहै चरण शरणात केचाकरसे द्वादश दिवाकर खड़ेरहैं। धनाधीशमन्दिर के द्वारपै कलन्दर से बंदर से बाहर पुरंदर परे रहैं ३ तोहींको भजत देविवेदाविष्णु शंकरसो तोहींछीनदा चरकेमुंड भटकतिहै। तोहींसुर रक्षक असुर वृंदभक्षक सो तोहीं रक्त बीजको रुधिर घटकतिहै॥ शंकर भनत एक तोहीं है प्रसिद्धजग तेरी शक्ति मनमेंन काहू भटकतिहै। पालिनीसो भक्तजन दाहिनीसदाही रहैशत्रुन विपक्षकार दंडपटकतिहै ४ ॥ कवित्तबसंतपंचमी॥

आजुशुभमाघकी बसंतपंचमीहैप्रभु बंदीजनबौरदैअनंद कोबढ़ायोहै। आजुहीते ढोलडफतालकी अवाजहोत आजुहीते गारिनके राग सरसायोहै॥ माधव कहत रंगलै गुलाल आजुहीते लोगन गलीन बीच कीचको मचायो है। सुखद संयोगिन को दुखद बियोगिन को पंचबाण आपनो अबलसरसायो है १ आजु ब्रज नारी सब करिकै तयारी पैन्हिपीतपट सारी जरतारी की सवांरी है। नैनकजरारी आड़ मृगमदवारी बेंदी

भालछबि न्यारी मांग मोतिन की धारी है ॥ माधव कहैरीमंजुबौर धरिथारीकर गहे पिचकारी लैगुलाल रंगवारीहै। जानिशुभकारी माघपंचमी बिचार किये उतसाहभारी नंदलालपैसिधारी है २ फरग्राबसंतीतामें तकियाबसंतीधरपर दाबसंती छति छाजत बसंती है। चीराहैबसंती अंगजामाहै बसंती कटिफेंटाहै बसंतीपद आनहूं बसंतीहै ॥ गजराबसंती अंगरागहु बसंतीसबसाजहु बसंती माधोकहत बसंतीहै। रागहै बसंती ताल बजतबसंती नंदलाल भे बसंती जानि पंचमीबसंतीहै ३ आजुहीते साजुऋतुराज की अनोखो भई आजुहीते ओखीभई नारी बिनकंतकी। आजुहीते आनँदबधाये देशदेशनमें आजुहीते गावैंनर रागिनीहसंतकी ॥ आजुहीते औरैरंग औरैराग औरैबाग बिहंग समाज औरै ओरै भौंर पंतकी। होरी नव गोरी के मिलापकी बधाई लाय आई अदभुतआज पंचमी बसंतकी ४ ॥

फागवर्णन ॥ खेलबेकोफाग देवदाराक्षी उतरिआई दीरघ दृगन देखि लागतीन पलकैं। खुलत दुकूल भुजमूलदर ग्रातबर उन्नत उरोजहार हीरनके हलकैं ॥ बेनीकबिभू पर धरतपद मंदमंद आननके ऊपरअनूप छबि छलकैं। लाललाल रंगभरी यौवनतरंगभरी बालभरी आनँदगुलालभरीअलकैं १ एकैसंग धाय नंदलाल औगुलालदोऊ दृगनगयेरी उरआनँद बढ़ैनहीं। धोयधोयहारीपदमाकर तिहारी सौंह अबतो उपाय कछूचित्तमेंचढ़ैनहीं ॥ कहांजाउं कैसीकरूं कौनसुनैकासों कहौं यतन बतावो

जाते दरद बढैनहीं । एरीमेरी बीरजैसेतैसे इन आंखिन सों कढ़िगो अबीरपै अहीरको कढ़ैनहीं २ केसरि सुरंगहूके रंगमें रँगौगीआज औरगुरुलोगनकी लाज परि हेलिबो । गाइबो बजाइबोजू नाचिबो नचाइबो जू रस वशहवैके हमसबो खेल खेलिबो ॥ ठाकुर कहत और होनीतो व्हैंहैगीबीर एक अनहोनी कहौ कौनी विधि झेलिबो । कर कुच पेलिबो गरे में भुज मेलिबो जो ऐसी होरी खेलिबो तौ हमतो न खेलिबो ३ आईफागु खेलिकैसुकेलिसुखसामुहे सों सुंदर सुघरीसों सनेहसर सावैहै । केसरिके रंगभीनी चूनरी सुरंगरंग अंगनअनंग की तरंग दरशावै है । राजत अनोखो आधो बदन गुलालमढो कहतकिशोरसें अनूपछबिछावैहै । अमल अभंग आछो युतउतसाह मानो अरुणघटाते शशिनिकसतआवैहै४ ॥ षटऋतुवर्णनबसंतऋतु ॥ मधुमतवारेभारेमधु मधुगुंजरत देखि गुणीजन गीत गावत उमाहके । कोकिलनकीबबोलैं करतकलोलैंआगे पौनहरकालेआले छूटे चितचाहके ॥ मोहनसोंकबिकहै शिशिर तगीरी कीन्हो वशकरिलीन्होदेशरहेना उमाह के । यहजिय जानुमानु करु ना गुमानुआलीडेरा परे बागन बसंतबादशाहके १ भौंरनके पुंजआगे गुंजरत कुंजरसे कोकिलनकीबसें कुहुकिउठिधायेहै।किंशुक निशानसे लसत आसमानछ्वैछ्वैवे।रबरछीनसों अधिकरूपछायेहै ॥ मोहनसोंकबिकाम कारीगर कोपकरि त्रिविधसमीर सोई सुरंगचलायेहै॥ माननी गनीमनकेमानगढ़ तोड़िबे

कोसकलसमाजसोंबसंतराज आयोहै शशिशिरनगीरी करिआनँद अमीरी पाय कीन्हो पतिझारदफतर सब रहीहै। बिरहपुरामें निज अमल लिखायलीन्हो हरे हरेचातुरीसों चौहदचौहद्दीहै॥ कोकिलनकीबनबीथि इदनकी बही बदि गैदनकी गिलसैं गुलाबनकीगद्दीहै। भेंटलै मिलौरी आलीटूटिगो गुमानगढ़ काम बादशाह के बसंतसुतस्वद्दीहै ३ डारद्रु मवागन बिछौना बनापल्लव को सुमन झँगूला सोहैछबि तनभारीदै। पवनझुलावै केकीकीरबतलावैं देवकोकिल हँसावैंहुलसावैंकरतारी दै। उड़तपराग सो उतारोकरैं राईनोन कंजकलीनाय-कालतान शिरतारीदै॥ मदनमहीपजूको बालकबसंत ताहि प्रातही खेलावत गुलाबचटकारीदै ४॥ ग्रीष्मऋतु वर्णन॥ जेठकी जलनि जलै मृगजल हलै तैसे पौनचलै जालिम जलाकनके जारेसे। कहैंगिरधारी जीवजंतु तेअनंत तेवैं जहांतहां छपेसबै तपे भौनभारेसे॥ अन्द रन नृपतिविपति परीबंदरन रहेदति दंदरन सरपसंहा रेसे। मंदरन सिंदुर मदांधधूपधंधरनकंदरन कोलभील कलहैं कलहारेसे १ तपतप्रचंड मारतंड महिमंडल में ग्रीषमकी तीषनि तपनिवारापारहैं। कहै गिरिधारी कीचकांचसीदहनलागोभयेनदीनदनीरअदहनधारहैं॥ झपटैं चहूंघासी लपटैं लपेटैं लूक फनीकीसी फूक पौन झूकनकी झारहैं॥ अवांसी अटारीतपी तवासी अवनि महा दावासे महल औ पजावासे पहारहैं २ तेज सरसानेभानुभूगिरिरिधिकानेभूरिधूरिकेउड़ानेदिगधुंधुरि

दिखाने हैं । पौनके झझाने झूक आगि जनुसाने बनझाड़ झरसाने सर सकलसुखानेहैं ॥ कोलकहलाने सबजीव अकुलाने अति आतप अघाने भाजि छांहन छपाने हैं । अंदर दुराने तहखाने खसखाने लोग सून कबिलाने इमिग्रीषमबखानेहैं ३ सूखेसर सरितासनाका सिंधुबेलालघु तोयनिधिकानो धराभूधरबखाने और । शाखनमें शाखामृग शकुन ससेटेसमदंती मतवारे जारे अनि लभ्भकोराझोर ॥ कहैंअवधेश कैसे बीतत बियोगिनकी दावानल दौरधैां बिलोको मीथाई छकोर । कहलमचीहै कोल कच्छपककोदरलौंउष्णारसमझूको उष्णारसमैंबढ़ीहैंजोर ४॥ वर्षाऋतुवर्णन ॥ मूंदिडारु झांझरे झरोखेद्वार नावदानपवन न आवैमेरो दरदबटावोरी । जेते आसपास बागबने हैं सुगंधनके तेते अबजाय जरा मूरते कटावोरी ॥ बेनीकबिकहै जोकलापिनसों राखा चहौ पापी पपिहाको यहि देशते हटावोरी । पिया गुणगावो नसुनावो शोर मोरन की घटा ना दिखावो बेगिआंगन पटावोरी १ कैधैां विषधर खाई मीच आई मोरनको भूतल प्रकटपरी कीचहू नईनई । कैधैां दौरि दादुर गयेदबि दरारनमें पापीपपिहाकी चोंच पावक दहीदई ॥ घासीराम बाक बक बाजनीको त्रास मानि कैधैां वहिदेश बीर पावस ठईनई । कैधैां काम श्यामजू के अंगते निकारिगयो जूझिगयो मेघ कैधैां बीजुरी सतीभई २ कैधैां वहि देश में हमेशा बरसत मेह कैधैां निजदेश वेश बादर निसरिगो । कैधैां बक

दादुरन दामिनी दिखाईदेत कैधौं पिक चातक मयूर गरथरिगो ॥ कैधौं हैनकागद कलमकी रवैयेडहांकैधौं शिवगुलामजू धवैये कहूंधरिगो । कैधौं उन गावन में सावनसुहावनना कैधौं मनभावनको आवन बिसरिगो३ लगी सो लगाय लंक लोयन खराबकरो मारिकरी मोरन अहार मारजारेको । सुकबि निहाल इनआंगु- रिन मूंदिमूंदि सुनिहौं न शोरघोर झिल्लीझनकारेको। भेखनकी भीर सहसानन समेटिडारो मेटिडारो गरब गरूर घनकारेको । जालसों जकरि कहूं पावों जोपक रिपंख फोहाफोहा करों या पपीहा दईमारेको ४ ॥

शरदऋतुबर्णन ॥ ॥ फूले आस पास कास बिमल अकासभ- यो रही न निशानी कहूं महिमें गरदकी । गुंजत कमल दल ऊपर मधुप मैन छापसी दिखाई आनि बिरहाफ रदकी ॥ श्रीपति रसिकलाल आली बनमाली बिन क छूना उपाय मेरोजयके दरदकी । हरद समान तनजरद भयोरी मोहिं शरद करत चारु चांदनी शरदकी १ ॥ शरद प्रकास भई पावसको आसगई कातिक के मास जूह बारिद बिलात है । आस पास कास शुलावास बृन्द फूले देखि सेज पै करेजे शूलहोत रैनिजात है ॥ ऐसही बिथामें कंत आयके पुकास्यो द्वार सुनिके अवाजभयो हर्षयुत गातहै । सुधि बुधि छांडीदौरि खोलतकिवांडी ब्रज सांवरे बिहारी मिलि प्यारी मुसक्कात है २ असल अकाश उदै कुम्भज सितारे तारेतारपति तैसी प्रभा सक ल सिहातेहैं ॥ सलिलसुखाने बीथी बिमल पयानेसाह

उदिततउछाह तुगतम्बू तरताते हैं। कहैअवधेश शोभा विशदविलोकि भूमिखंजनदेखाने यातेशरद सुहातेहैं कहूंकहूंविहत बलाहक बिलानलागे पदुमपरागलैलै अलिउडातेहैं ३ कासभयो कानन में कछुकविकास योग स्वाती आस चातक विषाद कछू नास भयो। नास भयोमृग दुखदजन हरदासकहैं आनंद चकोरनको चोरन त्रासभयो॥ वासभयो शरदशरद की अवाई जानि नीलग्रास खंजनको नगर निवास भयो। वासभयो सुखद सुवासको जलज मध्य कुंभजको प्रकट अकासमें प्रकास भयो॥ ४ हिमऋतु वर्णन॥ आछी अति कोठरी सवांरी सेजसोधे सन आस पास भीतर कपूर बगरे रहैं। द्वार परे परदे गलीचन सों ढांपीभूमि जरैदीय दीपन सोआनंद भरे रहैं॥ ताही समय कंत संग युवती हेमंत ऋतु पौढे पलका पै दोऊ आनँद भरे रहैं। शीत दुखद पटे सनेह सुखचपटे सो लपटे दुशालन में छपटे परेरहैं १ रावटी रँगीली पैरँगीलै दीपदान दीपै दावैदीह परदेसम्बूरी छिति छाईहै। कहै अवधेश तैसो फरस गलीचनकी आले आले सकल दुशालन सजाई है॥ उचउर उरजनकी प्रमदा प्रमोदें कास मीरोअंग राग जासों उठै उष्माई है। ठांव ठांव हौजभरे हलकैं हमानन के हरष हमेशा होत हिमऋतु आई है २ काले तनवाले मीन वालेमशालालेकंठ कालेकार कौलते विशालेछवि वालेरी। आले वनमाले जनपाले बलशाले खलघाले रस जाले सो कसाले निपटा लेरी॥ पाले हिमवाले सों ब-

चाले मनवाले बाल शाले औ दुशाले उरमाले सों उठालेरी। आंगी खसकाले मणिमाले को उठाले ब्रजबाले नंदलालको हियाले लपटालेरी ३ अगरकी धूपमृगमदकी सुगन्धवर बसन विशाल जाल अंग ढांकियतु है। कहै पदमाकर सुपौनको न गौन जहां ऐसे भौन उमँगि उमंग छाकियतु है॥ भोग औ सँयोग हित सुऋतु है मंतहीमें येते और सुखद सुहायेवांकियतु है। तानकी तरंग तरुणापन तराणीतेज तेल तूलतरुणात सालताकि यतुहै ४ शिशिरऋतु बर्णन॥ वारियां महलकी नहलकी सुंदीहै जहां रासैपरमलकी अँगीठियांअनलकी। जौंतमोम भलकी चिरौरैंहै नकुलकी जोण्यालियां असलकी पलँगै सखमलकी॥ ग्वालकवि थलकी लचीली लंकबलकी वो फूल समहलको प्रभामें झलाझलकी। बिपरीत ललकी कहैको बात कलकी सो बालै छबि छलकी दुशालेमें उछलकी १ आड़ेनारहत ह्मठाढ़ेहो रहत सदा पश्चिमकी पाय पौन पालासों फटतुहै। कांपत करेज सेज सोइबो सुखद कहा गरम गवांरकी गरूरता घटतुहै॥ बेनीकबिकहै पांयपानीके परसहोत पीरसी उठतनेम नाहीं निपटतु है। ओढ़िये दुशाला तरे तोशक बिशाला बिनालागे अंगबाला शीतकाला ना कटतुहै २ दरदर झांपै और थरथर हांपै तऊ थरथरकांपै अंगबजत बतीसीजाय। फेर सखतूलनके चोहरेगलीचनपै सेजमखमली सोहै सोऊ शरदीसी जाय।ग्वालकबिकहै मृगमदके धुकायेधूम बरतअंगी-

दीतामें आगिहूछुपीसीजाय॥ छाके सुरासीसी आनि सीसीसी सिरैगी जौलौं कुच उकसीसी छाती छाती सोन सीसीजाय ३ नारीबिन होतनर नारी बिन होत नर रातिसियराति उरलाये पयोधरमें। बेनीकवि शीत लसमीरकी सनाका सुनि सांझहीते सोवत कपाट दै सदनमें॥ पक्षीपर जोरेरहै फूलफल थोरेरहे पालाको प्रकासआस पास धरातलमें। बसन लपेटेरहै तऊजानु पेटैरहैशिशिर ससेटेरहै लेटेरहै घरमें ४ अथ षट्अंगवर्णन॥ प्रथमपदवर्णन॥गंगाजीके जलमध्य कंठकेप्रमाणपैठि जपि जपि सूर मंत्र आनंद बढ़ावही। केशौदास घामजल शीतसहैएककरस ठाढ़ेएकपांय कोटिकलपै नशावही॥ कोमलअमलभये सुंदर सुबास भये कमल निवास सब यदपि भ्रमावही। पायो बरु ब्रह्मपद पदमिनी पदमिनी तेरेपद पदवीकोपद पैन पावही १ मंदहू चपलइंदु बधुके बरण होतप्यारी के चरण नवनीत हूते नरमैं। सहज ललाई बरणी न जाय काशीराम चुईसी परत छबियाते मति भरमैं॥ येरी ठकुराइनि की नाइन गहत जब ईंगुरसों रंगदौरि जात दरबरमैं। दियो है कि दीबहै बिचारि शोचै बारबार बावरीसी होरही महावरी लै करमैं २ बिम्ब में प्रबाल में न ईंगुर गुलालमें न जपा पुहुपमाल में न किन चित निहारे मैं। दाड़िम प्रसूनमें नसून धरासूनमें न इंद्रकी बधूनमें न गुंज अँधियारेमें॥ हैकुहुम्भारंगमेंन किंशुक पतंगमेंन जावकमजीठ कंज पुंजबारि डारेमैं। राधिका तिहारे पग

अरुणा समताको हेरिहारे कबितान पावत बिचारे मैं३ जगमगे जावक जगीले जरबीले कैधौं ऊपरतेभूपर प्रभाकर प्रभालची। गरदबिहीन कैधौं शारदसरोजपुंज कैधौं छबि छायेसे बनाये बिधिलालची ॥ भौनकबि कहेरंगरातिके हरौलकैधैं। निकसे निवेरिगति गतिके बिशालची। तरुणतिहारे पग जगमग होतकैधौं जग के जलूसमैनभगके मसालची १॥ अथकटिबर्णन॥ कोऊ कहैकैधौंतत्त्व चारिके चुकेपैले अकाशहीसों कीन्हों चतुरानन चकरिहे। कोऊकहै कौनो छलछन्दहै कहत कोऊ बिधनै बनावत बिसारेउ हरबरिहे॥ तेरोईसो तनतोही जानैना जनेउकोऊ मेऊपायो सहीहै गोबिं दसन धरिहै। नाभिमन करणी तरंगिणी त्रिबलिकुच शम्भुलग पायेकै सुकृति पाइ करिहे १ उन्नत उरोजन को भारबेशुमार कौन करत बिचारपार बिगतअसार मै। नजरि न आयोध्यान धीरज लगावै गहे अंकहू न पावै कहूंकामकेबिहारमैं॥ भौनकबि कहै तिथिवार औलगन जैसे प्रकटन होत बिन ज्योतिष निहारमैं। ब्रह्मके स्वरूपते महीन कटितेरी येरीहांकरे किना करै सोना परै बिचारमै २ भूतकी मिठाई जैसी सांचे को भुंठाई जैसी स्यारकी ढिठाई जैसी छीन छहरतु है।धीरकैसोह ांसकेशोदासदास जैसोसुख शूरकैसी शंक अंक रंक कैसो बितुहै॥ सूमकैसो दानमति मूढ़ कैसो ज्ञान गोरीगौर कैसो मान मेरेजान समुदितु है। कौने है सवाँरी वृषभानकी कुमारीप्यारी तेरीकटि निपट

कपटकैसो हितुहै ३ येरीवृषभानकी कुमारी तवकटि लखि ध्यानमेंनआवै अति सूक्षम बिशालहै। कैधौंहर बरमें बनावतबिसरो बिधिकैधौं जोरिदीन्हो अनुतार लै कि वालहै ॥ माधव कहत करपरसते जान्योजात ऐनकलगायेलखिपरै कछुहालहै। सत्यहैकि झूंठहैकि नाहींहैकिहैधौं कछुजादूहै किमंत्रहैकि तंत्र इन्द्रजाल है ४ अथकुचवर्णन ॥ कैसेरति रानीके सँवौरेकहै श्रीपति जू जैसे कलधौतके सरूरुह सवाँरेहैं। कैसे कलधौतके सरोरुह सवाँरेकहे जैसेरूप नटके बटासे छबिधारेहैं॥ कैसेरूप नटके बटासे छबिधारेकहे जैसेकाम भूपतिके उलटेनगारेहैं। कैसेकाम भूपतिके उलटे नगारेकहेजैसे प्राणप्यारी कुच उन्नत तिहारेहैं १ कनक अनारदो तयारकरि कारीगरभरिकै शृँगार रसबंदनहींकीनो है। पायकै सुबास कैधौंलखि गुरुदास मनो कंजकी कलिन पै मधुपबास लीनो है ॥ कैधौं शम्भु अस्थिर ह्वै बैठेहैं सर्वन्निह्वैके शीशन पै जटाजूट सोहत नवी नोहै। प्यारी के कुचनपर काम खेलवारीमनो टोना डीठ लगिबे को स्याही धरि दीनोहै २ कूजे कंद कि- न्दुक से वालेगज कुम्भ कुम्भ सम्पुट सराहिकेते वारि वारि डारेहैं। चंद्रमुखी उरके उरोजनकी ओ पलखि चक्रवाक श्रीफल सकुचि हियहारे हैं॥ कहै शिव- ग़ुलाम चोखे नोखे नये नीरज से औंधि ये नगारे नये नारंगी निहारे हैं । सुभग सलोने अनुहारि हर होने लोने सोनेके अनारसे निहारि निरधारे हैं ३ ॥ कोक

कोक नदसे नगारे निहारियतु भारे भानमती केबटासे बरदरसे। कन्दकैसे कूजें तरबूजे नारँगीसे चारु सम्पुट सेवालेसे अनारश्रीफलसे॥ कहे गिरिधारी प्राणप्यारीके उरोजदोऊरूप केसीराशि महामोहनीके घरसे। गागरिसे गेंदसे गुरुज गजकुम्भजसे गुम्बजसेगुच्छसे गिरीशगिरिवरसे॥ अथमुखबर्णनम् ॥ कोमलता कंजसे गुलाबते सुगन्धलैके चन्द्रते प्रकाश सोते उदितउजेरोहै। रसलै रसाननसों नीर निरवाननसों चातुरीसुजाननसों कौतुक निबेरोहै॥ ठाकुर सोकबिया मसालो बिधि कारीगर रचना रचनहारो और सब चेरोहै। कुन्दन को रंगलै सवादुलै सुधाको बसुधाको सुखलूटिकै बनायो मुखतेरोहै १॥ एककहै अमल कमल मुखसीताजूको एककहै चन्दमुख आनँदको कन्दरी। होयजो कमलतौतो रैनिहोमें सकुचैरी चन्द जोती बासरमें द्युति होय मन्दरी॥ बासरहू कमल रजनीहीमें मुखचन्द बासरहू रजनी बिराजै जगबन्दरी। देखो मुखभावना न देखाई कमलचन्द ताते मुखमुखै सखि कमलैन चन्दरी २ मृगनकी मीननकी चंचलाई नखनमें हीरनकी मोतिनकी ज्योतिहै रदनमें। आई है सिमिटिकै मिठाई सब ओठनमें ऊखमें न दाखमें न स्वाद सरदूनमें॥ महाकबि बालमके खुलेहैं बिशालभाल रातिउ दिन राजत मसालसी सदन में। बिधनै गुलाबकैसो अरकउतारि मानों चन्द्रकी निकाई राखि प्यारीके बदन में ३॥ भृकुटीतनीको नकबेसरि बनीकोलट नागिनि फनीको

लखि कंजफूल फीकोहै । मैनकी मनीकोनैन बान की अनीकोबैन चोखेरस नीकोहौस हुलसनहीकोहै ॥ रूप रमनीको कहा रमारमनीको गजगति गमनीको सिंह जीवन सोजीको है । बेंदीचन्दनीको मन्दहासफन्दनीकोमुख चन्दहूतेनीको वृषभान नन्दनीको है ४ ॥

अथ नेत्रवर्णनम् ॥ ऐसेमैनतीके हैं न और जगतीके पैनरक्हूं गनीकेहैं न देखे हरनीके हैं । नाहीं नैनगीके बरलसैं पन्नगीकेमन मैनकाज नीकेनैन बानहू अनीके हैं ॥ उपमा नफीके बर सुखमा घनीके हमदेखे हैं नवीके मन मोहन भनीके हैं । मीन हैं न ठीके खंजरीटहू कहीके भोर रंकजहूते नीके नैन गोप नन्दनीके हैं १ सान धरी सुन्दर कृपानसी कही न जात बानहूते बेधक विशेष दरशावती । कैदकै कटाक्षनसों किम्मति करन की हिम्मति हजारनकी हरष हरावती ॥ भौनकबि कहैचारु चिकनी चवाइन में चंचल चलाक चोटऔचक बचावती । ऐसी अनियारी अँखियान में अंजन आंजि आंगुरी अजब वै अटाक बचि आवती २ भृकुटी चढ़ीके योधा मैनकी गढ़ीकेसौति दोषक दढ़ीके रंग करत रदीसे हैं । भाषात कविन्द्र चन्द्रमाकी ओर चाहकरि उपमा चकोर मति पावत कदीसे हैं ॥ कोकनद मुद्रित मलीने मृगसीनेमीन खंजननवीने हेरिहारे तेहदीसेहैं । इषाके अगीसेपै कमानके कषीसे मैनमदके मदीसे नैन तेरेसेनदीसे हैं ३ ॥ एकई झपाके में छपाके मनमोहेदृग ऐसे मारुमाके ना रमाके ना उमा के हैं ।

हैं। दशहूंदिशा के मनसाके फल देनहारे करन निशा के ईस ताके अब काके हैं॥ झापके जहांकेतहां मीन जल ढांकेगये हरिन हरीनहांके कवज कहांके हैं। सद नसमाके सुखसाके उपमाके चारु चंचल चलांके नैन बांके राधिकाके हैं ५॥ अथ केशवर्णनम्॥ श्रीपति सेवार कैसे सोहत शृङ्गार जैसे सोहत शृङ्गार कैसे जैसे तम धारहैं। तमनकी धारकैसे मरकतसार जैसेमरकतसार कैसेजैसेघनभारहैं॥ घननके भारकैसे मोरपखवार जैसे मोरपखवार कैसे जैसे अलिहार हैं। अलिनके हारकैसे पन्नग कुमार जैसे पन्नग कुमारकैसे जैसे तेरेबार हैं १ तमतम तामसरसादिपद तोयदसी नीलक जटासपाट जटि प्रजटीसी है। पजन प्रकन्दरप दीपक शिखासी चारु हाटक फटिक ओप चटकि फटीसीहै॥ कचकुच दुबिच विचित्रकृतबक्रवेध कूटी लटपाटी घटतट उप टीसी है। विरह अशुभ्रपक्ष तीतन प्रदोषपाय पन्नगी पिनाकी पदपूजि पलटीसी है २ सुन्दर मजीले पर लव्वसहजीले राधेपरमलजीले शुभ कजन कजीले हैं। बेलिनबसीले अलिऔलिन हँसीले रूपयश में यशीले आदि रस मेंरसीले हैं॥ नेहपरशीले परनेह सरशीले अननैन चमकीले चहकीले चटकीले हैं। तेरेकच नीले छूटि छबिसों छबीले मानो पन्नग नशीले मैं मन्त्रवत कीले हैं ३ पीठितन ताकतही डीठि डसिलेत आली फैलिकै विरहबिष रोमरोम धावतो। क्षणक में ऐसे हाल होतेना कितेकनके कोऊ येते गाडुरी कहांते हूं

ढिलावतो॥ ईश्वर देहाई कहूं होती वाकी व्यालि नी तो काली के नथैया कान्ह काहे को कहावतो। मुरि मुसक्यानि मंत्र जानती न राधे जोतो बेनीकेउसन ब्रजबसन न पावतो ४॥ अथ शृंगाररसवर्णनम्॥ चरण क मल तन सरस कुसुमरंग चम्पा के वरण तन गंधजुही जेनहै। नारंगीसी एंड़ी श्रौ उरोज बने श्रीफलसे बिम्ब से अधर दंत दाड़िम बिजैनहै॥ अलि कैसो केशरंग कीरकैसी नासिका है कंठतो कपोत कैसो कोकिला के बैनहै। गति गजराज कैसी कटि मृगराजकैसी हा यकैसो घूंघुट हरिन कैसे नैन है १ चम्पक कली सी खिली अली अवलीमें वृषभानकी गली में चलीजात पंथ पेखीमें॥ कामअबलासी कलाधरकी कलासी ल वलासीलिये कनक लतासी अवरेखी में। शिवलाल ताखिन ते आंखिन ते वाकी चाल दरत न टारे चारु हंसकी बिशेखीमें। छवि तनुजासी छवि दीपके उ जासी पंचबान के धुजासी सिंधुजासी जात देखीमें २ बानी कहिये तो वह बीनाको लियेई रहे गौरी तो गिरीश अरधांग में लगाई है। कमलान कान्हकेहि येते उतरत अरु रम्भामें तो येती नहीं रूप अधिकाई है॥ रति कहियेतो अति प्रौढ़ा अवहीं है अरु यामें तो अजौंलग कछुक लरिकाई है। फेरि फेरि बेरल गि हेरि हेरि हारयो नृप जानि ना परति यह कोहै कहां आई है ३ केशरि को गारुलै शिंगारुनाशिंगारु ना बिगारु देह दीपति मनोहर मसालकी। ऐसे कस

नीको लगै अमल अमोल तन खुलीशोभा सहज अनूप रूप जालकी॥ कहै गिरिधारी श्याम सारिहो सँवारे एक बार नेक अनेकछबि भूषण बिशालकी। मातु करैं आली वह मृग मदवाली आड़ सौति मदगंजनीहै अंजनी गोपालकी ४॥ अथ संयोग शृंगार वर्णनम्॥ अतर लजात मृग मद पछितात जात वारिजात हारिजात सौरभ सतत है। श्रीपति अगार मैं अगर उदगार ऐसो डगर बगर छवि छाजत अनन्तहै॥ हीकरनसुख मुख सौतिन मसी करन बदन जसीकरन जीकरनयंत्र है। पति सों रसीकरन रतिको हँसीकरन सीकरन प्यारी को बसीकरन मंत्रहै १ चन्द्रद्युति मन्दभई फंदमें फँसीहैं आनि ननद करैगी शोरछोड़ि गलबाहं दै। सासु सतरैं है जेठ पतिनी रिसै है बंकबचन सुनैहै अरे जोरि युगपाणिदै॥ नौलोहै गिनती औ बिनती हहाली देव कियो कहा चाहत रहनि कुलकानिदै। दानदेरे जानको निदान निर्दई कान्ह बसी सारी रैनि मोहिं अब घरजानदै २ कुन्दकी कलोसी दंत पंक्तिकी मुदीसी दीसी बीचबीचमीसीरेखअमीसी गराकिजात। बीरीत्योंरचोसी बिरचीसी तिरछीसी लखैरीसोआँखि याकैसफरीसी वै फराकिजात॥ रसको नदीसी दया निधिको नदीसी थाह चकित अरीसी रति डरीसी सरकिजात। त्योंफँद फँसीसी ऐसी हांतिजो कसीसी ताकेसीसीकरबे में सुधासीसीसीढराकिजात ३ सोयेसब लोग तुम आये भले योग मेटो बिरहबियोग उरआनँद

लपटकै। काहूकोन डरो परयंक मिलि परौ परिरंभ प्यारे परौं तुम्हें कैसे कोऊ हटकै॥ लीलाधर पीतपट न्यारोकरि धरो बनमाल परिहरो जामें नेकहू न अटकै। देहरीकी वा तरफ केहरि ननदपरी येहरि सँभा रुपग जेहरि न खटकै ४॥ अथ वियोगशृंगार वर्णनम्॥ ऊब तहीं डूबतहीं डगतहीं डोलतहीं बोलत न काहे प्रीति रीति न रितै चलै। कहै पदमाकर त्यों उससि उसास त्यों आंसू वै अपार आय आंखिन इतैचलै॥ औधि हीके आगम लौं रहत बनेतौरहौबीचही क्योंबैरीबन्धु वेदन वितैचलै। येरे मेरे प्राण कान्हप्यारेके चलाच लमें तबतौ चले न अब चाहत चितैचलै १ प्राण प्या रोगेहते पयानकरि गये आली माने मेरीदेहते पयान प्रानकरिगे। कहै गिरिधारी तबहींते सुधि बुधि गई आनँद विनोदनके मन्दिर उजरिगे॥ जाकेअंगलागि लूट्यो अमितअनंगसुख अंगते बिरहज्वाल ज्ञालन से जरिगे। जासों कबौं अंतर न हारनके परेहाय तासों अब अंतर पहारन के परिगे २ प्रयास प्रयास सघन बिराजैंघनचारोंओर कौंधा बहुतरल गगनबीच छ- हरै। दादुर औ मोर चहूँओरनते शोरकरैं मडीमहि मण्डलमें महाजल लहरै॥ प्रीतमप्रवास तासों दाहत वियोगी बाल कीन्हौंजू अनंगजोर बैठी अटाकहरै। छिनकमें पौढै छिन बैठै परयंकपर छिनक में करै हाय हाय उठि टहरै ३ आई सुधिपीतम की भूली सुधि और सब कौन समुझावैना सहेलीकोऊसाथमैं।

अतिही दुचित्त चित्त लाये सूने सदन मैं बैठी प्यारी धरिकै बदन एक हाथमैं॥ चित्रकैसी लिखीनेक डोलति न बोलति न बिरह की मोटधरि दीन्हीं बिधि माथमैं। सुनत न बात सूनेहोगये सकलगात बैठीध्यान कीन्हें मन दीन्हें प्राणनाथ मैं ४॥ अथहास्यरस वर्णनम्॥
हँसी हँसि भाजै देखि दूलह दिगम्बरको पाहुनी जे आवैं हिमाचलके उछाह मैं। कहै पदमाकर सुकाहू सों कहै को कहा जोई जहां देखै सोहँसेई तहां राह मैं॥ मगनभयेई हँसै नगन महेश ठाढ़े औरे हँसैं येऊ हँसाहाँसिके उछाह मैं। शीशपर गंगाहँसै भुजन भुजंगा हँसै हाँसिहीको दंगाभयो नंगाके विवाह मैं॥ अंबर लै सबके कदम्ब चढ़ि बैठोजाय हास्यरसमाहीं कबौं नाहीं कबौं हां करै। कहै गिरिधारी नीचे खड़ी ब्रज नारी सब अंगन उघारी बनवारीसों हहाकरै॥ हाथ जोरि करौं दिननाथ को नमस्कार कहै ब्रजनाथ तौजू तुम्हरोकहाकरै। बिना रवि बंदनन देहैदोऊकरजोरि बंदन करौतौ देय बसन बिदाकरै २ कहा कहौं नाथ कलिकालको जितैहैंनहीं जानिये कितैहैंनेक सुनतनहां करी। कविशिवलालदोषदीजै कौनन्यावबिन हाथपांव होकैंजिनकाठकोभ्रगाकरी। बिनडेरकीन्हेंमहापातक अनेकहम घातक यमनहूंतेलगी औलगाकरी। पावन पतित झूठीकीरति सुनायतेरी हायमेरो बेदन पुरानन दगाकरी ३ लक्षण तिहारे तौ प्रतक्षण लखैपरै बड़े २ क्षमलखि लाखमेंन दुरतो। सांपबैलबाघ बिषराखमूढ़

बांधेफिरौ गंगको प्रवाहहेरि हुवइत्तेभुरतो ॥ घासी रासहुकबि देवइया हरहोते कहां चंदजातो सिकिल न एको रंगघुरतो। गौरिजोनहोती अरधंगमेंगिरीशा कोसो सांचीसुनौ भूतनाथ खयबेको न जुरतो ४॥ अथ करुणारसलिख्यते ॥ आंसुन अन्हाय हायहायकै कहत सब औधपुरबासीके कहायो दुख दाइये। कहैपदमाकर ज्लस युवराजीको सुऐसोकोधनीहै जायजाके शीश वाहिये॥सुतकेपयानदशरथनेतजे जोप्रानबाढ़योशोक सिंधुसो कहांलौंऔगाहिये। मूढ़मंथराकेकहे बनको जो भजेराम ऐसी यहबात केकयीकोतौ न चाहिये १ अक्रूर गोहन चलत मनमोहनके बहुधा बिछोहन के बीजनको बोवती। कहैंगिरिधारी धीरधारिननाधारी धीर करुणा गंभीर ब्रजमंडलविगोवती॥ नंदकी यशो मतिकीगोपनकी गोपिनकी बिपति बखानै कौन आं सुनसों धोवती। चोखतीनलया चारोचरती न गैया मिलि जलकीगरैया औचरैया बनरोवती २ कदम की डालीचढ़िकूद औबनमाली कोपिकालीदहभीतर बियोगबीज ब्वैगयो। कहैंगिरिधारीधायेनगरकेनारी नर भईभीर भारी नीरनैननतेच्वैगयो॥ नन्द नँदरानी अररानीपरैं पानीबीच आकआक अररस शोकबीज ब्वैगयो। यमुनासमानो आजु ब्रजको सतन हाय यशु मति सूनबिन सूनब्रजहवैगयो ३ कामरीपरीहै कहूं ल- कुटीडरीहै कहूं बांसुरीधरीहै अब इन्हें कौनधारिहै। कहैं गिरिधारी कोरचैगो रसरासके न बिरचिबिलास

वृन्दाबन में बिहरिहैं ॥ यशुमतिरानी दीन बानीसों कहत आजु गोरसके काज कौन मोसोंआनि अरिहै। संग ग्वालबालन के खेलि है को ख्यालनको लालन बिनारी गोपालनकोकरिहै ४॥ अथपुन:करुणारस ॥ ग्राह गहे गजको अगाधै जल लियेजात त्राहि त्राहि भाषत भोभूरिभरेडरते। धायकै गोबिन्दआय फन्दते निफन्द कीन्हों दीन्हेंबाहबारनैसो काढ़िलीन्होंसरते॥ चन्द कप्रसादजू बिचारकरैं देवसब देख्योहम आवतनाभूमि धौंअधरते। वारितेमुरारि कैधौंकढ़ेग्राह आननते कंज तेनिकरि कैधौंआयेकरीकरते १ उठै कोपिकाले प्रल यकालवाले धाराधर शुण्डादण्ड धारैलगे धारैचहूंओर पर। कहैं गिरिधारी अकुलाने ब्रजबासी सब पाहि पाहि आरत पुकारते निहोरपर॥ मोरपंखवारे रख वारे ब्रज गाइनके तोबिना न कोऊ रखवारो यहिठौर पर। छोभकरि छोहनीते उठायलीन्हों छोनीधर छा यदीन्हों छत्रसों करुनियांके छोरपर २ गौवैंग्वाल बाल अहिगालमें समानेजाय जानतनहुते ख्याल खल बल जूटको। कहैं गिरिधारी पीछे रहिगे अकेलेका न्ह करुणा निधान धरे करुणात्रिकूट को ॥ देवकी नँदन चलि बदन अघासुरके पैठेआय पैठतही कीन्हों यह ऊटको। शैलके समानबढ़े फैलमेंफुलायोतन फू लिकै पानीको फन फाटिगयो फूटको ३ जानिपरी आनिकै अवाज कान्हजूके कान ज्ञानिजन आपनो अनाथकी पुकारयो । छोड़यो सिंहासनऔ छांड़यो

पन्नगासन औ छोड्यो गरुड़ासन सो धायो परमार
थी ॥ नन्दन सों कविप्यारी कमला अकेली छांड़ि
हाथन हथ्यार छोड़ो छोड़ो रथ सारथी । धाये ब्रज
राज गजराजकी अरजजानि आयेचलि वाहीके मनो
रथ महारथी ४ ॥ अथ रौद्ररसवर्णनम् ॥ वारि टारिडारों
कुम्भकर्णहि बिदारिडारौं मारौं मेघनादै आजु जो
बल अनन्तहैं। कहैं पदमाकर त्रिकूटहिकोढाहिडा-
रौं डारत करेई यातुधानन को अंतहैं ॥ अच्छहिनिर
च्छकपिरुच्छहवैउचारौं इमि तोसे तिच्छ तुच्छनको
कछूवैन गंतहैं । जारिडारौंलंकहि उजारिडारौं उप
बन फारिडारौं रावनको तोमैं हनुमन्तहैं १ मारिडा
रौं अनुज समेत यहिखेत आजु मेटिडारौं दीरघ बचन
निजगुरुको। सीतानाथ सीतासाथ बैठेदेखो छत्रतर
यहि सुखसोखों शोक सबहीके उरको ॥ केशोदास
सबिलास बिषविषे वासहोय केकयीके अंगअंग शोक
पुत्रज्वरको । रघुराजजूको राज सकलछिड़ाइलेउँ भर
तहिं आजु राजदेउँ प्रेत पुरको २ गोपिन सों कहत
गोपाल दानदीन्हेंबिन जाननहिंपैहो करौ केती उबरे
सीको । कहैं गिरिधारी राजडेरहि सुनाय कहा मोहिं
डरपावतिहो डरत न ऐसीको ॥ जाके बल बिक्रम को
तुमको गुमान ताको पलमेंमिटाऊं बलबिक्रमकी वैसी
को । मातहि पछारिडारौं फारिडारौं मुष्टिकहि मारि
डारौं कंसहि संहारिडारौं केसीको ३ प्यारो रामचन्द्र
को अनैरो दूत कोप्योबीर जासोंबल बाजीलागा प्रभु

के प्रसानकी। भनै भगिवंत लागी रावनै उदासी सब देवन सुधासी हांकहोत हनुमानकी ॥ पूंछमें न आंच लागी बाढ़िकै अकाश लागी आगिलागी देखिभागी भीर यातुधानकी। सयछुता शंकलागी प्रियादौरिअं-कलागी लंकलागी जरन जुड़ानलागी जानकी ४ ॥
अथ बीररस बर्णनम् ॥ चरिआेरसमुद विहदनदहदकीन्हें दुरघट ओटकोट पाय पुरपरके। कठिन करालकाल दण्डते बिशालबली कोटिन कृपानगहे वीर निशिच रके ॥ सहज अशंकबंक रहत निशंकसदा बरनौ कहां लौं कबिनन्द बरहरके। बैन कपिबरके सुनतहियहर के सोफरके उदण्ड भुजदण्ड रघुबर के १ सोहै अस्त्र वोड़े जेनछोड़े शीश संगरके लंगर लँगूर उचउचके उ तंकामैं। कहै पदमाकर त्यों हुंकरत फुंकरत फैलत फुलात फाल बांधत फलंका मैं ॥ आगे रघुबीर के स मीरकेतनैके संग तारीदै तड़ाक तड़ातड़के तमंका मैं। शंकादै दशाननको हंकादै सुबंकाबीर डंकादै बिजैको कपि कूदिपरे लंका मैं २ डहडहे डंकन के शबद निशं कसुनि बहबहे शत्रुन के सैना आनि खरके। कबि हरिकेश इत चम्पतिकोलाल चढ्यो उतै तुरकान दल उमड़ि घुमड़िकै॥ हाथीको उमड़माड़ूरायकी घुमड़त्यों त्यों लाली उघरत मुखछत्रशाल वरके। फरकिफरकि उठैभुजा अस्त्र बाहिबेको करकि करकि उठै करि ब खतरके ३ दौड़ेकालकिंकर करालकरतारी देत दौरी कालीकिलकत सुधाके तरंगते। कहैं हरिकेश दांतपी

सत खबीसदौरे दौरे मराडरीक गीध गीदर उमंडते ॥ बी रजयसिंह जंग जालिम सुकौनपर फरकाई भुज औ चढ़ाई भौहँभंगते । भंगडारि मुखते भुजंगडारि भुजते हरषि हर दौरे गौरी डारि अरधंगते ४॥ अथ भयानकरस लिख्यते ॥ पूरि रह्यो पातकमें कलही कुचालीकूर का थाभई कश्मल मलीन तनधारे को। देखि यमसौंहैं यमु नाकोलियो नामउन होत अन्तकाल नन्दलाल रूपधा रेको ॥ ग्वालकबि त्योंही यमभाख्यो हाय हाय करि कोऊ जनि जाऊ जो गयेतो मारिडारे को। दूरिकरि देगो दीह रौरवन मूंदिकरि चूरकरिदेगो अँरा अखि ल हमारेको १ झलकत आवैझुंड झीलम झलानिझा प्यो तमकत आवैलेग वाही औ सिलाही है। कहैं पद माकर त्यों दुंदुभी धुकारसुनि अकबकबोलैं योंगनीस औ गुनाहीहैं ॥ माधव को लाल कालहूते बिकराल साजि धायो सैनयेदई दईधौं कहा चाहीहै। कौनको कलेऊ धौं करैया भयो काल अरु कापै यों परैया भयो गजब इलाही है २ अति बिललानी यातुधानीक है गेहगेह रावन समान आन दूसरो अयानको। काहेते न बूझेउ आंखि बीसहू ना सूझेउजाको मूढ़मतिक्रोही द्रोहीभयो भगवान को॥ सुकबि सुबंशकहै आनि ज गदम्बै लैके निपट निशंके बंश नाश्यो यातुधान को। कालिकीश कल्ला कूदिकल्लाके समान परैं रावण मह ल्लापर हल्ला हनुमान को ३ माड़व उज्जैन भानि भूयन बहेलसेलौं सिंगलसरोज लौं परावने परत है। गौड़

थाने तिलगाने करनाटक फिरंगाने हफसाने हिम्मति की हद्द हहरत है॥ साहू के सपूत शिवराज शमशेर तेरी सुनि गढ़पती गढ़धीरता धरतहै। बीजापुरगोल कुरडा आगरे दिलीकेबीच बाजेबाजे दिन दरवाजे उघरत है ४॥ अथ बिभत्सरस वर्णनम्॥ नटकी समान मरकटभट भालुबहु दैत्यनके युद्धबीच चटचट चटकत। मारे खड्ग खूनन के घायबोलैं भकभक योगिनी जमाति लोलू घटघटघटकत॥ सुकबि सुवंश कहै गिरे गीध झुरडनसों रुरडन समेत मुरड गटगटगटकत। तड़पि तड़पि तहां पौनतनय महाबीर असुर बिलन्द महि पटपटपटकत १ कोपि नन्दजूके भट असुरअनन्तनको मारि गजदन्तन बिदारि देहदई है। कहै गिरिधारी एकपरे अंगभंग एकै परेहैं अपंग क्षिति घायल न छई है॥ मूष्टिक चाणूरको है कहूंकंस कूरको है औरको गनावै युद्धयुद्धनकी भईहै। श्रोणित सुरंगतासों होरही सुरंगभूमि रंगभूमि आजु रणरंग भूमि भईहै २ औझरीकी झोरीकन्धे अन्तनकी सेली बंधे मुरडन कमराडल खप्परकियो फोरिकै। योगिनी जमाति जोरि झुरडबने तापससे तीरतीर बैठेहैं समरसरि खोरिकै॥ श्रोणितसों सानिसानि गदासतुवासे खात एकैएक पीवतबहोरि घोरिघोरिकै। तुलसी बैताल भूत साथलिये भूतनाथ हेरिहेरि हँसत शिवासों हाथ जोरिकै ३ श्रोणित सलिलवर बानर सलिलचर गिरि बालिसुत विष बिभीषण डारेहैं। चमर पताका बड़ी

बाड़वा अनलसम रोगरिपु जासवन्त केशवबिचारेहैं॥ बाजिहुर बाजि हुरराजसे अनेकगज भरत सबन्धु इन्दु अमृत निहारे है। सोहत सहितशेष रामचन्द्र कुशलव जीतिकै समर सिन्धु सांचेही सिधारे है ४॥ अथ अद्भुत रसवर्णनम्॥ सातदिन सातराति करि उत्पातमहा मारुत झकोरैं तरुतोरैं दीहदुखमैं। कहैंपदमाकर करीत्योंधूम धारनहूं एतेपै न कान्ह कहूं आयो रोयरुखमैं॥ छौ रि छिगुनेकेछत्र ऐसो गिरि छायराख्यो ताकेतरेगाय गोपगोपी खरी सुखमैं। देखिदेखि मेघनकी सैन अकु लानीरहै सिन्धु में न पानी औ न पानी इन्द्रमुख मैं १ माटीखात मोहनको पायो कहूं मातुगहि सांटीडरपा यो प्रीति परिपाटी टारिकै। कहै गिरिधारी मुख दे खतही देखिपरे देखे अनदेखे सबलोक निरधारिकै॥ खम्भालागि शोचत अचम्भामानि छोहरेको अद्भुतरंग भरे कौतुक निहारिकै। यशुमति चापिरही रसनारद न नँदनन्दन दिखायो जबबदन पसारिकै २ यमतेडराय गृहलोगन छिपाय एक बूडोजाय पापीगंगरोगनकेदंगा ते। ताहीसमा छूटिगयो पापसों पवित्रभयो सुखनके योग लाल तरलतरंगाते॥ धाय आपधनद बिमानलै प्र घमनन्दी वाहै आदैौसिधिधाय धारके प्रसंगाते। अंग भरे सुखमें भुजंगधरे अंगवह गंगधरे शीशपै निकसि आयोगंगाते ३ गोरीगरबीली जाको गमन मयंदकोसो गरे मुकताहलको गजरा निरालावह। कज्जल कलित दृग ललितलोनाई भरे बलित उरोजनमें मृगमदआला

वह ॥ ग्वालकबि रविजा तिहारेतीरन्हाइ आइ धाइ लेनदेवनकी अवलि बिशालावह। शीशदीप मृगये पहुंचपाहिलेइगये पाछे श्याम रूपहवे सिधारी नवबालावह ४॥ अथ शांतिरसवर्णनम्॥ दामिनी दशन चारुचंदसो बदन देखि कामिनी मदनमोह मायामेंनफंदेरे। सुतके सुता के बनिताके ममताके हेत धायधाय थाके अब छांडु फरफंदेरे ॥ ध्याउ रघुनंदे करिदूरि दुखदंदे सुख सम्पति अनंदे ह्वैहै कीरति बलंदेरे। येरेमतिमंदे सब छांडु छलछंदे एक आनँदके कंदे रामचंदे क्योंनबंदेरे १ पापसोंगढ़ीहै हाडचामसों मढ़ी है तैसेनरक कढ़ीमहा अशुद्ध भावभोंडीहै। मज्जामांस सूत्रबीठरोम औरुधिर भरी कफपित्तवातके बिकार गड़ गोडीहै ॥ तापैकाम मोहमदलोभसें ग्रसितसदा सबकाल काहू बिधिकुमति न छोड़ीहै। कहै हरदासहे भजनकृत शुद्धनाते निपट निकामदेह निलज निगोड़ीहै २ नातीपूत नातगोतइष्ट मित्रभाइ बंधु ठौर ठौर भावनजू ठगिसे खरेरहें। शाल औ दुशालजाल नानामणि मुक्तमाल भूषण अनूपबेस दूषण भरेरहें ॥ कांधेचले चारिहीके बांधेरहें हाथी घोड़ पालकी पलंगपीठ ऊंटहूपरेरहें। कसिबिटमरस भये जितने बड़े औ छोटि प्राणगे अगोटि धनकोटिन धरेरहें ३ भूषन बसन बीस रतन अनेकजाति घोड़ेपील पालकी अनूप छबिधामकी। कहा नरनाह कहाभये बादशाहकहा शाहनकेशाह जौनदेहै परिनामकी ॥ बेनीकबिकहै ख्यालफालमें बितावैदिन पालैखलखाले

कैपखाले असचामकी। मनहीकी मनरहिजातींअभि लाखैं जब मूंदिगईं आंखैं तबलाखैं केहिकामकी ४

अथदशनायका बर्णनम् ॥ दोहा ॥ प्रोषित पतिका खंडिताकल हंतरितानाम॥बिप्रलुब्ध उतकंठिताबासकशय्याबास १ स्वाअधीन पतिका कहत अभिसारिका बखानि ॥ बहुरि प्रवासित प्रेवसी आगतपतिका जानि २ कहौ अवस्था भेदयुत दशौ नायकानाम॥ तिनके लक्षण लक्षिसब बर्णाकहैं अभिराम ३ ॥ अथप्रोषितपतिका ॥

दोहा ॥ बालमबसतबिदेशमें जोबियोग अकुलाय। प्रोषितपतिका नायका ताहिकहत कबिराय १॥ कबित्त ॥ आलीमोहिं लागतहै वाबिन खलकखाली कबैं। मुकतालीके बिभूषण करैंनहीं। कहै गिरिधारी कलपरत न केहूनेक पलिकापरेहू कल पलकपरैंनहीं॥ रैनदिन घेरघर रहत घनेरेलोग लाखनकी मौजवारे आंखन अरैंनहीं। रहत बसोई परदेशवारो प्यारो वह हियरे हमारेते बिसारे बिसरैंनहीं १ लागत बसंतके सुपाती लिखीपीतमको प्यारीपरबीनहै हमारीसुधिआनबी। कहैपदमाकर यहांकोयों हवाल बिरहानलकीज्वाल सों दवानल ते मानबी॥ ऊबकी उसासनको पूरो पर गासा सोतो निपटउसास पौनहूंते पहिचानबी। नैनन कोढंगसोअनंग पिचकारिनते गातनको रंगपीरेपातन तेजानबी २ विरह तिहारेलाल बिकलभईहैबाल नींद भूखप्यास छिगरी बिसारियतुहै। चोरीकैसीबातचंद्र माहँते छिपाइयतु बसननतानिकै बयारिवारियतुहै॥

कहैमतिराम कलाधरकोसी कलाछिन जीवन विही न सीनसी निहारयतुहै। बारबार सुकुमार फूलनकी मालऐसी मारकै मरोरनि मरोर मारियतुहै ३ आयो ऋतुपावस न आयोपति प्राणप्यारो मेघन बरजु आली गरजि सुनावैना। दादुरन डपटु न बकि बकि फोरैं कान चातक बरज अबपीव रटिलावैना॥ बिरहा बिथा में मैंतो ब्याकुल परीहौंदेव जुगुनूचम कि चित चिनगी चलावैना। कोकिला न गावैं मोर शोरना मचावैं घन घुमड़िनधावैं जौलौं श्यामघर आवैना ४॥ अथ खंडिता॥ दोहा॥ आन तियारतिचिह्नधरि आवैपिय परभात। दुखमंडित सोखंडिता बरणतकविअवदात॥ कवित्त॥ बैठीपरयंक पैनवेली निरशंकजहां जागी ज्योतिजाहिर जवाहिरकी जागैज्यों। कहैं पदमाकर कहूंते नंदनंदन हूं औचकही आये अलसाये प्रेम पागेयों॥ झपकीहै पलक पियाकेपीकलीक लखि भुकि झहराय हूंननेकु अनुरागौ त्यों। वैसही मयंक मुखी लगत नअंकहुती देखिकै कलंक अब येरी अंकलागै क्यों १ जावक लिलार ओठ अंजनकी लीकसो है पांयन अलीक लोक लोकना बिसारिये। कविमति राम छाती नखछत जगमगे डगमगे परमूधे मगमें न धारिये॥ कसकै उघारतहो पलकपलकयाते पलका में पौढ़िश्रमरतिको निवारिये। लटपटे पेंचशिरबात न कहतवनै अटपटेपेंच शिरपागके सुधारिये २ ओढ़न में काजर लगाये काहू कामिनीको भामिनीके भौन

आये गजरके बाजते। कहै गिरिधारी सेदपानीसहि जानी लखि नागरि सयानी वा रिसानी ब्रजराजते॥ भौंहन भँवाय अनखाय रिसपायबकै बैठी मनभायेतेन वाये नैनलाजते। चेरिया न करौ ये चरित्र तिरियाके लाल किरियानकरौ भलीबेरिया बिराजते ३ पीतम प्रभात अलसात आये दोयभरे प्यारी कछुरोष भरे बचन उचारोना। कहै गिरिधारी उठि आदर अदाब कियो बोली मृदुमंद मुसक्याय मनुमारोना॥ यद्यपि सुभावनसों मिली मनभावनसों नाहको गुनाह तिया तद्यपि न्यवारयोना। मानिनीके जीको मानजानिगो सुजानजब करत बिहार हार उरते उतास्योना ४॥ अथ कलहंतरिता॥ दोहा॥ पहिले पियसों कलहकरि करय जो पुनि पछिताव। कलहंतरिता कहतहैं जेजानत रस भाव१॥ कवित॥ जाकेकाजबोरयो कुलकानिकोजहा जअरुजाके काज लोकलाज सकल बहायोरी। जाके काजहांसी अंगरेजी बृजबासिन को जाकेकाज नांव कुलिगांवमें धरायोरी॥ कहै गिरिधारी जाकेकाजको न्ह्यांयेतें आजुतासोंहें रिसानीरूसरह्यो मनभायोरी। सरबस आपनो दयबरबस लीन्हें हाथतौन लालहाथ ते गँवारिहैं गँवायोरी १ झालरलदार झुकिझूमति बितानबिछे गहबगलीचा अरु गुलगुलीगिलमैं। जगर मगर पदमाकर सुदीपनिकी फैली जगज्योति केलि मंदिर अखिल मैं॥ आवत तहांई मनमोहन को लाज मैन जैसीकछुकरी तैसीदिलहीकी दिलमैं। हेरि हरि

बिलमैंनलीन्हें हिलमिलमैं रहीहैं हाय मिलमैं प्रभा
केभिलमिलमैं २ ससकि ससकि हियो कसकि कस-
कि उठैताके आप सोतननाकाढो भौनकोनेसें । एक
तानलागे मुकतानके अनेकहार कबसे दराज काजह्वे
सोनसोनेसें ॥ भनत कबीन्द्र ऐसेनाहसें गुनाह बिन
कियोहै बिगार धारदारै कौन टोनेसें । येरी मेरी
कुमतितें कलह करायेअब सुलह करावै कौन सांवरे
सलोनेसें ३ बिनतीकरेरीकें निहोरी करजोरीकर
हाहाकै महान मनुहारी अनुसरी है । घूंघट उघारयो
हौनने सुकनिहारयो वह रूठिउठि गयोधैां अनैसी कै-
सीघरोहै ॥ कहैं गिरधारी मो मनाव न रहोरी अबवा-
हीके मनावन की मेरेउर अरीहै । आपते मनाय बीर
लालको बुलायलाव लालकी बलायलौटि मेरेसिर प-
रीहै ४॥ अथविप्रलुब्धा ॥ दोहा ॥ ब्याकुलहोयबियोगसों सुनु
पियहोयनभेट । बिप्रलुब्धवातासोकहत सूनीलखै सहेट
कबित ॥ खेलको बहानोकै सहेलिनके संगचली आई
केलि मन्दिरलौं सुंदर मजेजपर । कहैं पदमाकर तहां
न पियपायोतिय त्योंहीं तनतैरही तमीपतिके तेजपर॥
बाढ़त बियाकी कथा काहूसों कछू न कही लचकि
लतालैं गई लाजहीके लेजपर । बीरीपरी बिथरि क-
पोलपर पीरीपरी धीरीपरी धायगिरी सीरीपरी सेज
पर १ प्यारकरि जीमें प्रान प्यारेके मिलापहेत आई
कुंज मंदिर प्रकाश चंद आधेके । आस पास आली
लिये अगर गुलाबपास भूषन बसन साजि सुखमास-

माधेके ॥ भौनकबि कहैं सुनों देखिकै सुखायगई कहै ना हवाल कछु काम अंगदाधेके। दाहि गई देहबिथा लाजते न कहिगई रहिगई बीरी अधखात हाथ राधे के २ सकल शृँगार साजि संगलै सहेलिनिको सुंदरी मिलन चली आनँदकेकंदको। कबि मतिराम बाल करति मनोरथनि पेख्यो परजंक मैनप्यारे नंदनंदको नेहते लगीहै देह दारुण दहनगेह बागके बिलोकि द्रुमवलिन केवृन्द को ॥ चंद्रको हंसत तब आयो मुख चंद्र अब चंद्र लाग्यो हंसन तियाके मुख चंद्रको ३ लोगनकी चोरी बनकुंजन किशोरी गई लाग्यो हिय होरी हूं नदीख्यो घनप्रयास है ॥ कहैं गिरधारी अंग अंगन अनंग हन्यो संगकी जनीसों मतराय बोली बामहै। वदेनासहेटमोहिं बादिही बोलाय लाई बिना बन माली इहांखाली परयौ धाम है ॥ खाये की अकूती किधौं तेरीमति धूती आजु दूतीतैंकियोरी यती मारनको कामहै ४॥ अथ उतकंठः ॥ दोहा ॥ जोतिय पियके मिलनको अति उतकंठित होय॥ताहि कहत उतकंठिता कबि कोबिद सबकोय ॥ कबित्त ॥ सौतिन के त्रासते रहेधौं औरबासते न आये कौन गासते प्यो करतो तलासतैं। कहै पदमाकर सुबासते जवासते सुफूलनकी रासतैं जगीहै महा सासतैं ॥ चांदनी बिकासते सुधाकर प्रकासते न राखतहुलासतैं न लाखखस खासतैं। पवनकरु आसतैं न जाउ उठि पासतैं अरी गुलाब पासते उठाव आस पासते १ यमुनाके तीर बहै शीतल स-

मोर जहां मधुकर मधुर करत मंद शोर है। कबि म-
तिराम तहां छबिसों छबीली बैठी अंगनते फैलतिसु-
गंध की झकोरहै॥ पीतम बिहारी के निहारिबेको
बाटऐसी चहूंवोर दीरघ दृगनि करी दौरहै। येक
वोरमीन मनो येकवोर कंजपुंज येकवोर खंजनचको-
र येकवोरहै २ भारी दरदावन किनारीदार साजि
प्यारी मदन मनोरथके ब्योत बितबतिहै। कहै गि-
रिधारी निशि चन्दउजियारी चारुनिज मुख चन्दकी
उजारी जितवतिहै॥ डगर निहारत बिहारीजू तिहा-
री ऐसे चंचलदृगन मृगमद क्रतवतिहै। यमुना तटीमें
बैठिकै यकघटीतेचतपरी चटपटी चहुंवोर चितवति
है ३ बैठी रंग रावटी निहारीमैं पियाकोबाट आये न
बिहारी भई निपट अधीरमैं। देवकीनन्दन कहै प्रयास
घटाघेरिआई देखिगति प्रलयकी डरानी बलबीरमैं॥
सेज मैं सदाशिवकी मूरति बनाय पूजी तीन डेरतीनि
हूंकी कीन्ही ततबीर मैं। पाखनमैं सांवरो सुलाखन
अखैबट ताखनमैं लखनकी लिखी तसबीरमैं ४॥
अथ बासक सज्या॥ दोहा॥ मनभावन मो सेजमें ऐहैं आजु
बिशेखि। सजैसेय भूषण बसन बासक सज्या लेखि॥
कवित॥ सोरह सिंगार कै नवेलीके सहेलिन हूंकीन्ही
केलि मंदिर में कलपित केरेहैं। कहै पदमाकर सुपा-
सही गुलाब पास खासे खसखास खसबोइनके ढेरेहैं।
त्यों गुलाब नीरन सों हीरनके हौज़भरे दंपति मिलाप
हित अरती उजेरेहैं॥ चोखी चांदनीनपर चौसर च-

सेलिन के चंदनकी चौकी चारुचांदीके चंगेरेहैं १ केस-
रि कनक जहां चम्पक बरणा कहां दामिनीयो दुरि
जात देहकी दमकते। कबि मतिराम लोने लोचन ल-
पटि लाज अरुण कपोल कामतेजकी तमकते ॥ पग
के धरत कल किंकिनि नेवर बाजें बिछिया भमकउ-
ठें येकही भमकते। नाह सुख चाहि चितयोंचकहंस-
ति चौंकि परे चन्द मुखी निज चौंककी चमकते २
बेसरि बिराजै राजै केसरिको अंगराग नखतसे फूले
मांग मोतीबड़े वोजके। कहैंगिरिधारी रतिमंदिर मो-
हारे लगु आसपास फैलत फुहारे छबि फोजके ॥ सेज
रंग मे जपे सलोनी साजिवैसी आजु साजे साजमंजु
लन सरस सरोजके। लाजभरे लोचन बिलोकत
पियाकोमशु मनमन करत मनोरथमनोजके ३साबुको
कोहाय नंद ताहूसों रहीरिसाय जेठोहूं सोएेंठी अति
ऐसी गतिगाहीहै। देवरसों नेवर पुहावैकेमिसहिरूठी
दासीसों अंगूठीकी उदासी चित्त चाहीहैभनत कबीन्द्र
बाल बसककीरजनी मे सजनीसुबास पास राखी मह
सहीहै ॥ पैली और गैलीनाहीं आवनकी कैलो ताहि
कोठरी अंध्यारीमैंअकेली सोइ रहीहै ४॥ अथस्वाअधीन
पतिका ॥ दोहा ॥ स्वअधीन पतिकाकहति पीतम जासु अ-
धीन। देखिरूप गुनशीलशुभमोहे श्यामप्रबीन॥ कवित्त ॥
पीजिये सदाई रूपरावरेको आंखिनपै कीजियेकहाजू
लोकलाजकरिबोपरे। मेरेहेतरह्योघरघेरे घनश्यामसो
हिंबोलतबिलोकतहँसत डरिबोपरे ॥ कहैंगिरधारीक-

हूं लोगचरचैंगे तौ रचैंगे परपंच यातेह्यांते टरिबोपरै। लालअब जावचलिजायगो चवावह्यांतौ गोकुलमैंफूंकि फूंकि पांव धरिबोपरै१ चाहभस्यो चंचल हमारोचित नौल बधूतेरी चाल चंचल चितौनमें बसतहै। कहैपद माकर सुचंचल चितौनहूंते औझकउझकि झझकनि में फँसतुहै॥ औझक उझक झझकनिते सुरभि वेश बांहीकी गहनि माहिंआय बिलसतुहै बांहोकी गहनि ते सुनाहींकी कहनिआ।यो नाहींकी कहनिते सुनाहीं निकसतुहै२ पुरबधू परबधू तिनसो न जोरडीठि तेरी वोरहेरे हेरियत हरबरसों। कंतवै हमारे परदेशमें बितायोद्यौस बीतैंकैसे पलपल बीतत पहरसों॥ धन्यतेरी भागभटू भावतोतिहारो न्यारोतेरेरंग राच्यैातजैघरिको न घरसों। सौतिजन सालेतीको सालसो तिहारे बस लालह्वै रहोहै मालतीको मधुकरसों ३ जादिनतेनौल बधू आई गौनहाई वह तादिनते लालन कहाधैां मन ऊटीहै। रात्योदिन बदन निहारत रहततासु तजत न सदन बड़ोई प्रीतिजूटीहै॥ ढारतहै चैार औ सुधारत अलक खुली खलक बिहाय लाह गोपिन की छूटी है। मोह्यो बनमाली अलीकीजिये उपायकहा कैसी व्रा बधूटी डारि दीन्ही कौनबूटी है ४॥ अथअभिसारिका॥

दोहा॥साजि सकल भूषन बसन जाय जो पीतमपास। ताहि कहत अभिसारिका जेकबि बुद्धिबिलास॥कवित्त॥

सौलश्री मंजुलकी गुंजनकि कुंजनको मोसो घनश्याम कहिकामकी कथैगयो। कहै पदमाकर अयाइनको

तजि तजि गोपगन निजनिज गेहके पथैगयो ॥ शोच मतिकीजै ठकुरानी हमजानी चितचंचलतिहारो चढ़ि चाहके रथैगयो। छीनन छपाकर छपाकर मुखीतुचलु बदन छपाकर छपाकर अथैगयो।१ अंगनमें चंदनचढ़ाय घनसार सेतसारी क्षीरफेन ऐसीआभा उफनातहै। राजत रुचिर शुचि मोतिनके आभरन कुसुम कलित केश शोभा सरसातहै॥ कबिमति रामप्राण प्यारेको मिलन चली करिकै मनोरथ न मृदुमुसक्यातहै। पोति ना लखाई निशिचंद्रकी उज्यारी मुखचंद्रकी उज्यारी तनछाहैं छपिजातहै२ सकल शरीर चारु चंदनबलित कियेकेशनमें कलितललित मालतीकली। कहैंगिरिधारीहै सवांरी सेतसारी तैसी सोहत किनारी सेत सेत मुकतावली॥ निकसी छबीली क्षीर सागर तरंग ऐसी अंगअंग आजुउफनात आभाउज्वली। जामिनीजोन्हाई में सुकामिनी जोन्हाईसम मिलिकै जोन्हाईमें कन्हाई केमिलैचली ३ उमड़ि घुमड़ि घनघेरिके घमंडकीन्ह्यों निशिअंधियारी कारी सूझत न पंथको। प्यारीबनमालीपै सिधारी बनवाही मांझमालै पंचबानपंचबान केनिखंगको॥ अहिरह्यो पांवगहिपांवरह्यो अहिगहि कौतुक बखानैकौन बिषमभुवंगको। लीन्हेलोहलंगर ज्यों सांकरसमेत छूट्योजातहै मतंगमानो नृपतिअनंगको ४ ॥ अथप्रवत्सितप्रेयसी ॥ दोहा ॥ सुनैजवानी कंतकी जो अतिव्याकुलहोय। ताहिप्रबत्सित प्रेयसी कहतसुकबि सबकोय॥ कवित्त ॥ लालन तुम्हारो परदेशको चलन

सुनिपलन प्रियाके जलकन भरियतुहै। कहैगिरिधारी नईप्यारी पियरायगई गहिगहि गोदबीच नारीधारियतुहै ॥ मोहन जू ऐसे चकचोहट बढ़ायचले मीठको दिखाय जैसेईंट मारियतुहै। कौनवहरीति कौनप्रीति सिखीप्यारे लाल कालिहलाये गौन आजुगौन करियतुहै १ कसुकुच कंचुकी सोविरचु बिमलहार मालतीकेफूल येधरेई कुम्हिलायगे। गासगोरी चंदनसंवारु अंग आभरन दीपक उचारुतम छिति परछायगे ॥बार धूप अगर अगारधूप बैठीकहा आजु अमरेश तेरेबदलि सुभायगे। आईसांझ सरस सोहाईसेज साजुयह कहत सुवाके आसुआके नैन आयगे २ सौदिनको मारगतहां को बेगिसांगी बिदा प्यारे पदमाकर प्रभातरातिबीते पर। सोसुनि पियारी पिया आगम बराइबेको आसुन अन्हाय बोली आसन सुसीतेपर ॥ बालम बिदेशतुम जातहो तो जावपर सांची कहिजाव कबऐहो भवन रीतेपर। पहरके भीतरकै दुपहर भीतरकै तीसरे पहर कैधौं सांझही बितीतेपर ३ मोहनलला को सुन्योचलत बिदेशभयो बाल मोहनीको चित निपट उचाटमें। परी तलबेली तन मनमें छबीलीराखै छातिपर छिनकु छिन कुपांव बाटमें ॥ पीतम नयन कुबलायनको चंदभयो घरीमें चलैगा मतिराम जेहि घाट में। नागरी नवेली रूपआगरी अकेली रीती गागरी लैठाढ़ी भई घाट ही के बाटमें ४॥ अथ आगन पतिका ॥ दोहा ॥ जातिय को परदेशते पीतम आयो होय। आगन पति का नायका

ताहि कहत सब कोय ॥ कबित ॥ आयो परदेश ते सु-
हायो अति वाको चित मोदभरी मूरति बिलोकि
ब्रज भूपकी। कहैं गिरिधारी फूल मालिकासीफूली
फबि औरे छबि जालिकाभै बालिका अनूपकी ॥ उक-
स्यो उरोज अरु बिकस्यो सरोजमुख ओज आई
आंखिन मनोज महबूबकी। लाली भई तनमें खुसाली
भई मनमें सोसाली भई बिरह बहाली भई रूपकी १
आजु दिन कान्ह आगमन के बधाये सुनि छाये मग
फूलन स्वहाये थल थलके। कहैं पदमाकरत्यों आरती
उतारिबेको थारनमें दीप हार हीरन के छलके ॥ कंच-
नके कलश भराये भूरिपन्नन के तानेतुंग तोरन तहांई
झला झलके। पौरिके दुवारते लगाय केलि मंदिर लौ
पदमिनिपांवड़े पसारे मखमलके २ नागर बिदेशमें बि
ताय बहुद्योस आये नागरिके हियमें हुलास निसिया-
नकी। कबि मतिराम अंक भरत मयंक मुखी नेहै स
रसाय रही मति सुखदानकी ॥ सुबरन बोलके बतावत
है सुबरन होरेंनिजलावतहै छबिमुसक्यान की। आं-
खिन ते आनँदके आंसू उमगाय प्यारी प्यारेको दे-
खावत सुरति मुक्तानकी ३ लटकत आजुलट मुखपरबा-
रबार आनँद उमँगि भरि हियेजिय थरकत। सरकत
भूषन बसन चारुपै धनको परकत मनतनु रुचि सुचि
ररकत ॥ छरकत अंगअंग अंगन उछाह लोने ठरकत
ऐसो रूप अंगनते अरकत। सारी सिरसरकतचूराक-
रकरकत आँगिअंग दरकत आंखि बांई फरकत ४

अथस्वकीयानायकालिख्यते॥ दोहा ॥शील सुधाई सुभगता सलज्ज सुलक्षणालस। गुणश्रनेक सुक्रियानमें पतिसेवामेंदक्ष॥ कवित ॥कोरनिलौं हेरनि श्रौहंसनि कपोलनलौंबोलनि मधुर श्रधरानिमें लगीरहै। उमड़े सकोच शील शोभा मढ़ेवडे नयन लाजवडे लोगनकी जियमेंजगीरहै॥ कहै गिरिधारी गुणगुथी साधु सूधीसोहै कुलके बिशालकी उमंग उमगीरहै। सूमहिये नेम जो बढ़ाइबेको हेमपिया प्रेमकेवढ़ाइवेकोपंथत्योंपगीरहै१शोभित स्वकीय गन गुन गनतीमें तहां तेरेनामहींकी एकरेखा रेखियतुहै। कहैपदमाकर पगीयें पतिप्रेमहीमें पदमिनितोसेंतिया तूही पेखियतुहै॥ सुवरण रूपजैसो तैसोशील सौरभहै याहीसें तिहारोतन धन्य लेखियतुहै। सोनेमें सुगंधना सुगंधमैं सुन्योनसो सोनोश्रौ सुगंधतोमेंदोनोंदेखियतुहै२ दीपसम दीपति उदीपति अनूपति जरूपके स्वरूप रति रूपहिहरतिहै। कहैपरताप करिमञ्जनसरसमन रंजन पियाकेदृग श्रंजन भरतिहै॥ ताहीसमै दूतीदिखलायो श्रानिभ्रमर लिखि निपटउदास ह्वैउसासन भरति है। सारसविलोचन बिचारिचितच्चेति राजहंसनके बंशकी सिपारसि करतिहै ३ परमप्रबीणताई प्रथमसमागममें प्यारीको बिलोकि पियछोभ्यो तियलीनजानि। कहै कबितेयपति शोचमेंटबेकेकाज लिखनलगीसो चित्र श्रापनेसरोजपानि॥कुंभीलिख्यो सिंहनिजनितलिख्यो सिंहसुत श्राधोकढ़ि कुम्भनिबिदारयोनिज कुलवानि। समुझि स्वभाय चित चातुरी बिलोकि प्यारो श्रंकभ-

रिलीन्हो निजअंक मेंरमिोदमानि४॥ अथमुग्धानायका॥दोहा॥ जोबन आगमकी उमग जाके अंगमेंहोय । मुग्धा तासों कहतहैं कबिसबग्रंथ बिलोय ॥ कवित ॥ अंगन में नेक छबि जोबनकी सोहैलगी देखि मनमोहै लगी मोहन सुजानको । कहै गिरिधारी अबहींते याकी ऐसीदुति दिना दशही में रूप जितिहै जहान को ॥ गिरिवर जीतेचले अंकुर उरोजनके भौहैं बंक जीतैचली बंकुर कमानको । लोचनछबीलीके अवशा परसनचलेंचलेत्यों छबीले केश छुवन छवानको १ ऐंड़िन अरुनाई अंग औपतिगोराई जंघयुगुल नितम्ब पीनताई पकरतिहै । कटि खीनताई लरिकाई लीनताई मुखचन्द्र में जोन्हाई ज्योति जाल वगरतिहै ॥ भनत कबीन्द्र पेखि अंकुर उरोजनके पिय हिय प्रेमके खजाने से भरतिहै । कुवरी के तन तरुणाईकी अवाती पेखि सौतिन मन नासिवाती से परतिहै २ बिसरन लागो बालपन को अयानप सखिन सों सयानपकी बतियां गढ़ै लगी । दृगलागे तिरछे चलन पगमंद लागे उरमें कछुक उस-र्सान सी चढ़ै लगी ॥ अंगनमें आई तरुणाईयोंझलकि लरिकाई अबदेहते हरेहरे कढ़ै लगी । होनलागी कटि अबछटिकै छलासीहैज चन्द्रकी कलासी तन दीपति बढ़ैलगी ३ मंदमंद चाललागी चलन गयंदगति चंदमु-खी आनँद के कंद दरसातीहै । लागी कछु तनक तिरीछे करैं ईछनको मृदु मुसक्यान लागी शोभा सरसा ती है ॥ भृकुटी कमान लागी कानबंधी तानलागी ता-

हीको बोनान लागी सुद्धि सरसातीहै। सखिन लजान लागी मोहै मन कान्हलागी हेरे जेहि ओर सोसुधासो बरसातीहै४॥ अथमध्या ॥ दोहा ॥ जाके तनमेंलाज अरु कामबरोबरिहोय। मध्या तासों कहतहैं महा सु कबिसबकोय ॥ कवित्त॥ उरज उतंगनको माननकोहार दीन्हो कंठै कंठश्री दीन्हों बाजू बंद बांहको। मंदमंद गतिसों गयंद गति जीतिलीन्हो सखिहून संग लीन्हो लीन्हो चित्त चाहको॥ लाजलाजवती कोबोलावै केलिमंदिर को नेह बरजोरीकै मिलावति है नाहको। धाराबश नाव गत पूरबको चाहत है लीन्हे जात जैसे हठि केवट पछांहको १ रैन अंधियारी तैसी पावस की घटा कारी उठीअधीकारी झंझा पवनकि झमाकसे। कहैगिरिधारी मनमोहन मयंकमुखी सोवै परयंक रतिरंग की रमाकसे॥ प्यारो अंकभरै उर अंचल सकोल करै केलिका कलोल कामतेजकी तमाकसे। रह्योतमछाय गयो दीपक बुतायतहूं कामिनी लजायरहै दामिनी दमाकसे २ झालरनदार झुकि झूमत बितान बिछेगहब गलीचा अरु गुलगुली गिलमें। जगर मगर पदमाकर सुदीपनकी फैलीजगाजोति केलिमंदिरअखिल में॥ आवत तहांई मनमोहनको लाजमैन जैसी कछुकरी तैसी दिलहीकी दिलमें। हेरि हरि बिलमैं नलान्हो हिलमिलमे रही हैहाय मिलमें प्रभाकी झिलमिलमें ३ केधौंरि कनक कहां चम्पक बरनकहां दामिनी योटूरि जातदेहकी दमकते। कबिमतिराम लो-

ने लोचन लपटिजात अरुणा कपोल काम तेजकी तमकते॥ पगकेधरत कल किंकिनि नेवर बजै बिछिया झमक उठै एकहीझमकते। नाह सुखचाहिचित चौचक हँसति चौंकि परै चंदमुखी निज चौककीचमकते ४॥ अथ प्रोढ़ा ॥दोहा ॥जो प्रबीन रतिरीति में कामकलान उदार। प्रौढ़ा तासों कहत है जाके पति अति प्यार॥ कबित॥ रमति निशंक मनमोहन मयंकमुखी अंकमेंरही जोबसि नवलकिशोरके। कहैंगिरिधारीसारी रजनी ललासों मिलि कीन्हो केलि कला कामकौतुक करोरके॥ होत आवै यामिनी को अंत उठिजैहै कंत याते करै कामिनी चरित चितचोरके। दीपक पुरावै मुक्तावली दुरावै कलीकोलकी चोरावै यों भोरावै चिह्न भोर के १ चहचही चहल चहूधा चारुचन्द्रनकी चन्द्रक चुनीन चौक चौकन चढ़ीहै आब। कहै पदमाकर फराकत फरस बंद फहरि फुहारनकी फरस फबी है फाब॥ मोद मदमाती मनमोहन मिलै के काज साजि मणिमन्दिर मनोज कैसी माहताब। गोल गुलगादी गुलगिलमै गुलाब गुल गजक गुलाबी गुलगिन्दुक गुले गुलाब २ रगमगी सेजपर जगमगी शोभा चारु मणिनमय मन्दिर सयूखन अथाहकी। उदयनाथ तामें प्राणप्यारी और प्राणप्यारोलाल कोककी कलानि करत सराहकी॥ किंकिणी की नीकी धुनि नूपुरु ननाद सुनि सौतिन के बाढ़त बिषाद बादगाहको। त्रिभुवन जीतिके उछाहकी ब-

ञतिमानी नौबति रसीली मनमथ बादशाहकी ३ प्रीतमप्रभात अलसात आयेदोसभरेप्यारीकछु रोसभरे बचन उचाख्योना। कहैगिरिधारी उठिआदर अदाव कियो बोली मृदुमंद मुसकाय मनमाख्योना ॥ यद्यपि सुभावनसों मिली मनभावनसों नाहको गुनाह तियतद्यपि निवाख्योना। माननीके जीकोमान जानिगो सुजान जब करत बिहार हार उरते उताख्योना ४ अथ नवोढ़ा ॥ दोहा ॥ मुग्धा जहंडरलाजसोंकर नरतिकीचाह। ताहिन वोढ़ानामकरि बरणत सबकबिनाह ॥ कवित्त ॥ बैठी बिधुबदनी कृशोदरी दरीचीबीच खींचि पीन ग्रंकपरयंक परलैगयो। भनैपजनेश भुजलपटि ललाके लगीछपटी सुनीबी कर जघन समैगयो ॥ गोरीगोरी भोरीसुखसोहै रतिभीति प्रीतिरति कुसरक्त रतिअंतसो रजैगयो। मानोपुखराजते पिरोजाभयो मानिकसोमानिकभयेते नीलमनिनगहोगयो १ दूसरीहबेलीमेंनबेली को अकेली लखि लाड़िली ललीजो शिरमोर सखियानमें। कहैगिरधारीलाल ललकि छबीलीबालगहि भुजमालसी लगाय करिवयानमें ॥ परवशपरी प्यारी बरवस छूटोचहै उरमें गढ़ायनख नान्ही नखियानमें। भयेतन कंपित प्रसेदकन छायेउठे पुलक सुहाये आंसू आये अँखियानमें २ सुनिके समागमको कांपतमयंकमुखी रतिकीन चाहनेक थिरना रहतहै। दिननकी थोरीगोरी भोरी सब बातनमें नीबी कसिबांधी डोरी छोरी नाचहत है ॥ कहै मतिरामदिन डूबेप्राण डूबि

आवै सामुहे बोलाय दौरि पांयन गहतहै। याही भ्रम माहीं पियागही आनिवाहीं हमनाहीं हमनाहीं परछाहीं सों कहतहै ३ लाइकेललिमन्दर भोरायभोरि भामिनीको फूलगंध केफवास कीन्हीं पौनरुखते। कंचन कलित अतिकेशरिते रमनीय लीन्हीगहि पीतमप्रसून सेज सुखते॥ भनैपजनेश भुजभरत हहाके हिये सीबीके सिसिटिश्याम नीवीदाबि दुखते। अहि करि उछलि सचोट पन्नगीसी ऐंठिउमठि अरीरीसैंमरीरीकहि मुखते ४॥ अर्थविपरीत॥ दो०॥ पतिपौढ़ेऊपरत्रियाकरैंबैठिरति रीत। आलिंगनचुंबनकरै ताहिकहतविपरीत॥ कबित्त॥ सिसकत सांसैभरै बीचेबाहु पांसैभरै सांसैभरै रसिक रसीली चित चोजकी। कहै पदमाकर सुदोऊ बिपरीत माह महमही मड़ीमाजा मञ्जुल मनोजकी॥ श्यामरंग भीनी झीनी सवज कंचुकी सों फोरि निकसि रहीहै अनी युगलकिशोर की। माना रूप सागर ते उन्नत अनोखी अब आनि कढ़ी काईफोरि कलिका सरोज की १ नथकी चलनि कटि किंकिनी कलनि हिये हारकी हलनि उर उरज उतंग की। लंक की लचक परयंक की मचक इतउत की हचक रंग रचक सुसंग की॥ अंगन झलक हिये नेहकी छलक कबरामजू ललक कोक मिथुन बिहंग की। झूमत झुमक विपरीत की घुमक चुभी तियाकीहुमक कैधौं ठुमक अनंग की २ रति विपरीत में रमत अलबेली लखि कुंदनकी वेलि सी ससकिकै सकुचिजात। वेनी

कवि कहैंबिहसति बतरात बिज्जुछटालों छहरि घन-
श्याम तन जरिजात ॥ मोतिनकी लरें अलकावलि के
तरेलसें उघरें जुरें यों मुखचंद देखि दुरिजात । श्रा-
श्रि मानो आगेडारि पाछे पांति तारनकी तमकी ज-
मातिमैं उभरि लरि मुरिजात ३ प्यारे बिपरीत रति
करैं प्यारे पीतमसों दुहुनके अंगन अनंग देखि हरषैं।
भनत कबिन्द्रवेनी पीठही पै परीडोलै पन्नगी सी बाह
प्रेम बल्लरी सो करषैं ॥ नखरद खंडन चतुर नारि चु-
म्बन कै सीबीकरै पीवें त्योंन सीवी नेम परषैं । भाल
ते उचटि स्वेदकन परें कुचन पैं इन्दुमनो ईशपै सुधा
के बुंद बरषैं ४ ॥ अथ सुरतांत दोहा ॥ नेहभरे आलस भरे
सकुच भरे रतिरंग । ये नैना अध अधखुले जगे पगे
पतिसंग ॥ कबित्त ॥ जागी रतिरंग में रसीली अरसी-
ली बैठी सेजपै अकेली आजु आदरसधरिकै । वेनी
कबि वेनीके खुलेहैं पेंच मेचक यों पेच पेच छाये मुख
मंडल बगरि कै ॥ ताहीमें अरूझो शीशफूल सों अतुल
छबिऐसो सुरझायलियो प्यारी कर करिकै । बांधो
तमबंधन बिलोकि मानो दिनकर प्रात अरबिन्दन
छुड़ायो बंधु लरिकै १ प्यारी रतिरंग प्रात बैठीजीती
साफ जंगअंग सुभटनको इनाम बकसतिहै । आंगी दई
कुचन भुजनबाजूबन्द दये नूपुर पगन बेंदीभालसो लस-
ति है ॥ मोहनसो कबि नैन अंजन अधर बीरो जघन
दुकूल कानफूल सरसति है। पाछेपरे जानितानि मोह-
न कटाक्षन सों बारबार बंधन सों बारन कसति है २

उठी अलसात करिरति पतिसंग बाल होत परभातच-लीआईयुतशंकहै ॥ लागीकाशा मीरीछबि सोहत सुगंध मई कुचनपै छतछूटी शीशलटैं बंकहै। आलसबलित गात जमुहात मीड़ैंदाग कंजसम हाथ मुखसोहत मयंक है॥ मानहुं कलानिधिको धोलकरिबे के हेत बारिज को नातोमानि धोवत कलंक है ३ छूटिगये सिगरे सिंगारहार टूटिगये तऊवोप उलहत सलगजी सारीते। रदछद अधर कपोलनमें दानकरि नखछतछातीमें ल-गेहैं जेबिहारीते ॥ अलकैं बिथुरिरहीं झलकैं प्रसेद कन अधखुली खुलीरही पलकैं खुमारीते। देह पेराई छाई लोचन ललाई सबरातिकीजगाई आईउतरि अ-टारीते ॥ ४ ॥ अथ ज्येष्ठा ॥ दोहा ॥ बरनत ज्येष्ठकनिकहि ज्यहि बिधि ब्याहीदार। करै एकपर प्यारअति दू-जीपै घटिप्यार ॥ कवित ॥ दोऊ छबि छाजती छ-बीली मिलि आसनपै जिनहिं बिलोकि रह्यो जात न जितैंजितैं। कहै पदमाकर पिछोहै अति आदरसे छ-लिया छबीली कत बासर बितैंबितैं ॥ मूंदे हरि एक अलबेलीके अनोखेदृग सदृग मिचाउनेकख्यालनहितै हितै। नेसुक नवाय दृग धन्य धन्य दूसरीको औचक अचक मुख चुम्बत चितैंचितैं ॥ १ ॥ पौढ़ी एक सेजमें सलोनी मृगनैनी दोऊआनि नाहपीतम सुधासहू बर-सै। कवि मतिराम ढिगबैठो मनभावन दुहूनकेहिये में अरविन्द मोद सरसै ॥ आरसी दै एक को कह्यो कि निज मुख लखो अरविन्द बारिज बिलासबर दरसै।

दर्पण वारी जौलौं दर्पण देखै तौलौं प्यारे प्राणप्या-
रीके उरोज हरि परसै २ बैठी हुती आंगन में अं
गना अनूपदोऊ उठीफाग खेलिबेको आवत बिहारी
को। देखिनन्द नन्दको अनन्दभई दोऊइमि पेखत च
कोरीजिमि चन्दकी उजारीको॥ कहै गिरिधारीतहां
देखत दुहूंकोलाल डारि दीन्हो दृगन गुलाल सुकुमा
रीको। जौ लौं वहकाढ़ै अँखियानते अबीर तौलौं ब
लबीर परसै उरोज प्राणप्यारीको ३ दोऊ इकठौर
जहां बैठीहै जलजमुखी प्यारो तहांआयो धीरताई ता
कि नेहकी। नेह सरसाई निरसाई न छपाईछपै समता
ई सुलहकी कुहूक ज्योंमेहकी॥ भणत कबिन्द्र रंगभे
दही में अंगद्युति सुकेरंग देखिपरी दुहुनकी देहकी।
पेरीसारी दैकैलाल सुक बहराई पहिराई लालसारी
लालसारी जासों नेहकी ४॥ अथपरकीया॥दोहा॥ जोत्रिय
करैछपायकै परप्रीतमसोंप्रीति। परकीयातासोंकहत
जेजानतरसरीति॥ कबित्त॥ घातपरै कबहूं दुराय कहूं
मिलिजात ऐसे दुरे डरेनेह कहांलौं निबाहिये। आंखि
नको ओट चकचोहत चढ़ाईरहै आठौयाम श्यामसुख
देखोचारु चहिये॥ कहै गिरिधारी पानपानी मिसि
छूजैगात पवनमिसिलोचनकीलाभौंनितलहिये। जानत
है जाननी जहान उपहासी सहि वृन्दावन वासोकी ख
वासी ह्वै कै रहिये १ गोकुलके कुलके गलीके गोपगा
वनके जौलगि कछूको कछू भारतभानै नहीं। कहै प
दमाकर परोस पिछवारन के द्वारन के दौरगुण औ

गुण गनैनहीं ॥ तौलौंचलि चातुर सहेलियाहि कोऊ कहुं नीकेके निचोरैं ताहि करतभनैं नहीं । हैंतौश्याम रंगमेंचोराइ चितचोराचोरी बोरततो बोरयोपैनिचोरत बनैंनहीं २ चित्रलै चितेरी चुरिहेरिन चुरियान लैके हारलिये मालिन सुपासहूं खरीरहे । जावकलै नाइन गोसाँइन बिभूति लीन्हे सांझहू सकारेहार धोबिन अरीरहे ॥ गैयनके गोड़में गोड़ैयनकी भीरबड़ी सांवरे बिहारी जू सों धीरना धरीरहै । येरी यहिगांव बीच बसिबो हमारो नाहिं पतिव्रत पारिबेकी बिपति परीरहे ३ पथिक परोसिन न पाहीपतिआपनेको औरैं उपपति के सनेहसों सनीरहै । ननँद निगोड़ीनित छोड़िपतिआपनेको परै पै अकंत परकंत सों धरीरहै । सासुऔ जेठानी देवरानी की कहानी कहा चेरी औ चवाइन चवावसोंभरीरहै॥ येरीयहि गांव बीचबसिबो हमारो नाहिं पतिव्रत पारिबे की बिपति परी रहै ॥ ४ अथ ऊढ़ा ॥ दोहा ॥ ब्याही औरैं पुरुष सों प्रीति और सों कीन । ऊढ़ा तासों कहतहैं सुकबि सुरस परबीन ॥ श्यामल गहीलो गात पट चटकीलो पीलो छैल गरबीलो यहिद्वार ह्वै निकरिगो । टरिगो हमारो धीर धीरज हियेते आजु रूपकी झलाझलमें घूंघट उघरिगो ॥ मनचित कहैपतिव्रत की कहैको आली रूपको देवालो दृगद्वार ह्वै निकरिगो । सारीसराश्याम श्याम पूतरी नवसि गोरी हेरिबो हमारो सो हमारे गरे परिगो १ सूखी सरसीसी श्रम ब्याकुल बैठी है कहा

नज़रि लगी है हमा तोरितोरि नाख्यो मैं। बेनी क-
वि भोरहीते बावरी सी घूमतहै लाज कछू काज गृह
काज अभिलाख्यो मैं॥ ललकै हमारो जीव बोलो ना
बिलोको काहे बैन आंखैं मंदिरहीं तातेदीन भाख्यो
मैं। पलकैं उघारो क्यौंन कढ़िजाय आंखिन ते ओर
मतिकरै चित चोर मूंदिराख्यो मैं २ उरझाइ दुकुल
द्रुमन सुरझावै लागैं काढ़ै लागैं कांटगाहि कबहूंपगन
सों। कबहूं नेवाज खुलेकेसन कसनलागैं कबहूं गिरन
लागैं सुंदर अगनसों॥ ऐसेछलछंद कैकै ठाढ़ीहवै रहत
यों शकुंतला निपट भई व्याकुल लगनसों। सखिनकी
नज़रि बराय बराय नारि फेरि फेरि देखति महीपति
दृगनसों ३ राजैरसमेरी तैसी बरषा समैरी चढ़ी चप-
ला नचैरी चकचौंधा कौंधा बारैरी। ब्रतीब्रतहारैं हिय
परत फुहारैं कछुछोड़ै कछुधारैं जलधर जलधारैरी॥
भगात कविन्द्र कुंजभवन पवन सौरभ सोकौनकीकपा
यकै परावोहाय पारैरी। कामकेतु कासिफल डोलि
डोलिडारैसन औरैंकरि डारैये कदम्बन की डारैरी४॥
अनूढ़ा नायका॥ दोहा॥प्रीतिकरै कहुं मीतसोंजो अनब्या-
हीबाम। ताहि अनूढ़ा कहतहैं जे कबिगुण गणग्राम
कवित॥ ताही ठौर लाल कछु खेलतहैंख्याल जहांबाल
कोगमन आगमन दिनरातिहै। जानत न सखीसखाल-
खीलखा दुहुनकी लाजमयीनयौं लगन सरसाति है॥
उदयनाथ प्यारी इतै न्यारो गात बैठो उतैंघात गहे
प्यारी कछू न्यारी अैठलातिहै। ऐंचिकरअम्बर उरो-

जउकसोहै करि भौंहके लगीहै तिरछो है तकिजाति
है १ इतैराजिरही थोरी बैसकी किशोरी और इतै
इनहूंकी बनी उमिरिकिशोरकी। कहैगिरिधारीकर
तारकी सवारी चारुयुगयुगजीवै यहजोरी बरजोर
का॥ दोऊमन कामना की गरजपूर्जिबे के काम करत
गजानन सों अरज निहोरकी। राधिका बिहारी जूसों
ब्याहकी लगन लागी लगन अगारीकौन जानीहुती
औरकी २ लालन को पिंजरा निहारि कर लालन
केबाल हाथ पटैलै रुखाई भरै रितवै। भणत कविन्द्र
नैनखंजन सचावै दोऊधावै फिरि आवै नेहजेरीभरैनि-
तवै॥दोऊ मुसकात सोहै देखत सकात दोऊ जानत न
घातकोऊ जात कितकितवै। सुरुखके मिसप्यौसुरुख
राखै वहीबाम्रुवाकी ओरचाहि बामुवाकी ओरचित
वै३जैसीलगी हुतीबालपानसे दुहूंकी प्रीतिजैसी बनी-
हुतीजोरी एकही मिशालहै। जैसा हुतेमनमें मनोरथ
दुहूंके अब तैसोकरि दीन्हो बिधि सुखद बिशाल है॥
माधवकहत राधा श्याम को बिवाह होतहैंहीं सुनि
आईनन्दगेहयह हालहै। धोयगये सिगरे कलंक सुनि
आईली बड़ीभई हैखुशाली भाग्यशाली नन्दलालहै ४
अथ॥गुप्तादोहा॥ रतिकरि करत दुराव जो गुप्ता कहत
सुजान। बरणीतीनि प्रकारसन भूत भाव्य ब्रतमान॥
कबित्त॥ शंकपायलेनको गुलाबकीबढ़ीहै डारौंबारीकी
मजारी शीशहूंते अधिकाईहै। फूललेत करतेबिछुरि
छतियांमें अरैछूटै छतियांते फटै वसन बनाईहै॥ खंडत

अधर भौंर जपाके कुसुम जानि कराठंकत होतगात जातछेद छाईहै। ननँद जेठानी ठकुरानीबनी बैठी रहै मोहिंको न देखिदेहि मोहींको पठाईहै १ पुहुपकी बाटिकामें गईती पुहुपलेन बानरकठिन एकदौरिकै लपटिगो। नखन बिदारी सारी फारीमेरी मलमल की कीन्हीमैंपुकारतब कुंजन झपटिगो॥ भगिकै मरिकै मैं इहांलौंआई शिवनाथ धरकतिहै छातीरंग मुखको कपटिगो। श्वासभरिआई पियराई मुखछाई दौरिगेह तकआई पटस्वेद में चपटिगो २ आलीमैं गईहौं आजु भूलि बरसाने कहूं तापर तूपैं पदमाकर तनैनी क्यों। ब्रजबनितावैं बनितानपै रचैंहैं फाग तिनमें जोऊधमिनि राधामृग नैनीयों॥ घोरिडारी केसरि सुबेसरिबिलोरि डारीबोरिडारीचूनरि चुचाति रंगनैनीज्यों। मोहिंझकझोरिडारीकंचुकी मरोरिडारी तोरिडारी कसनि बिथोरिडारी बेनीत्यों ३ सासुमोहिं त्रासदैपठायेहै प्रसून लेन कौतुक तहांको तोहिं सगरो सुनाइहौं। फाटेपट केवरेके कंटक अटकि काटे भौंरनके ठौरठौर रहीछत छाइहौं॥ कहै गिरिधारी कितै आइकै अकेली कहा आपने शरीरनकीसांसति कराइहौं। मेरीबीर बीरकी दोहाई भूलिआई आजु आजुते नगीचे याबगीचेके न आइहौं ४॥ अथवचनबिदग्धा॥दोहा॥ कहतबिदग्धाभांतिद्वैजे कबिसुमतिसुजान। बचनबिदग्धा एकअरु क्रियाबिदग्धाआन॥ कबित्त॥ आजुहौं कहांते उतनाहक नहानगई हानिभई तातेतहांमहाभय भीजिये। कहैगिरिधारी

बनमांझ होतआवै सांझ साथ ना सहेली हौं अकेली हायमोजिये ॥ मैयामोहिं मारीभैया भवनते निकारी पैयापरत कन्हैया मेरो कहोकाम कीजिये । भूलिकहूं कालिन्द्री के कूलमें हेरानो आयलाल मेरे छलाकोहेराय नेक दीजिये १ आजुदीपमालिकाको पूजनगईहै सबरैनि अँधियारीहैा अकेली कहा कीजिये । प्रेतऔ पिशाचनकी नारीडोलैं घरघर धरक करेजेहोत ताते भय भीजिये ॥ श्यामहिं सुनायकै कहतगोपी बारबार दीपक बुझानी मैनताने सरकोजिये । जौलैं घरहाई आवै मन्दिर लौं हाहा तौलैं आवरी परोसिन बलाय तेरी लीजिये २ आईहै निपट सांझ गैयागई बनमांझ ह्वांते दौरिआई मेरोकहो कान्ह कीजिये । मैंतोहौंअकेली औरदूसरोन देखियतबनकी अँध्यारीमें अधिक भय भीजिये ॥ कवि मतिराम मनमोहनसों पुनिपुनि राधिका कहत बात सांची ये पतीजिये । कबकी हैां हेरति न हेरेहरिपावतिहैा बछराहेरानोसो हेरायनेक दीजिये ३ औघट कलिन्द्री के कदम्बनके वृन्द जहां विपुल बयारि हरिआवनेन पावती । कारेकारेपथिक सिहावन करारे भारे शोभा सूर कीरन जहां न कढि आवती ॥ कहत परोसिनसों बचन सुनाय श्यामै चातुरीसों आपनो मिलनदरशावती । ऐसेदौरगईगैयाघरमें न मैयादैयामैया मोहिं मारि मारिहूढन पठावतीध॥ अथ क्रियाविदग्धा॥ दोहा ॥ करै बचन सों चातुरी बचन बिदग्धा होय ।करैक्रियासों चातुरी क्रियाबिदग्धासोय॥ कबित॥

मंजुल निकुंजनमें मंजुल महलमध्य मोतिनकी झालरैं
किनारिनमें कुरवृन्द। आयगेतहांई पदमाकर पिया-
रे कान्ह आनि जुरिगये त्यों चवाइनके नीके वृन्द॥
बैठी फिरि पूतरी अनूतरी फिरंग कैसी पीठदै प्रवीनी
दृगदृगनमिलै अनंद।आछेअवलोकिरहीआदरश मंदिर
में इन्दीवर सुंदर गोबिंदको मुखारबृन्द १ रात चांदनी
मेंबैठी चांदनी बिछौनाकरि आसपास मंडलसहेलिनके
वृन्दको। ताही समय आये तहां कुंजते सोहाये श्याम
चारु चतुराईके पसारि फरफंद को। कहैगिरिधारी
अति सुंदर तमाल छबि बालको दिखायो लालमंदिर
अनंदको॥ सखिन भुराय यदुरायको उतरुदयो प्यारी
नीलपटसों चोराय मुखचंदको २ बासरनबीतैं नैनाभरि
भरि रीतैं प्यारी चढ़ै न अँटारीऔकढै ना पाउँगेहते।
भणात कविन्द्र कैसेदेखै दुरिसांवरेको झांवरेबदनहोत
देखेबिन देहते॥ खिरकी न दीन्हीताकी पियासुधि
कीन्ही तिया अति परबीनी छीनी छलबल छेहते।
कुंजी कुंज मंदिरकी पतिहि देखाय राखै कुलुफडराय
यदुरायके सनेहते ३ बाईजगिआई कबिराज छाती
भरीआईपीरिपरिआईऔनिकसिआई पासुरी। सूखि
केरकतगयो पाइयेरतीको कहूं जीको। परोशोररहोाल
सोहैनमांसुरी॥ कौनयह पीरपावै काहूसोंनहींकहवै के
क्षणाक्षण कछूकआवैस्वंघतउसासुरी। आनन ढेकानो
किये आननसोंबातैंकरै काननकी ओरकिये ऐसीसूधी
बांसुरी ४॥ ऋथलचिता॥दोहा॥ प्रीतिकरे के डोरबांधियो

खियांलखै लखाय । ताहि कहतहैं लक्षिता जेप्रवीगा कविराय ॥ कबित ॥ तेरेक्यों छपाये छपै छापेदार अंगियामें अतर गुलाबीजो लगायो रंगबागको । रदछद ऊपर दरद ग्रारहदयेरी रदकौरसकै कौन लग्यो रद भागको ॥ बातन निआई प्यारे भीजत बचाई प्रीति प्रकटी सुहाई सुखपायेनेह लागको । लालकी कुसुम्भी लालपाग दागवारी वहै सखीकहै देतहै किशोरी अनुरागको १ भूल्यो गृहकाज लोकलाजमन मोहनी को भूल्यो मनमोहनको मुरलीबजाइबो । अबही दिन द्वैमें रसखान बातफैलिजैहै सजनी कहांलौं चंद्रहाथन दुराइबो ॥ कालिहतो कलिन्द्री तीर चितयो अचान कहीदोउनको दोऊओर मुरिमुसकाइबो । दोऊपरें पैयादोऊ लेतहै बलैया उन्हैं भूलिगई गैया उन्हैं गागरी उठाइबो २ अबहीं अकेली कढीआवत निकुंजनते आनँदसकेलि केल किये मनभायेते । कहैगिरिधारी जानीसगरी सयानी हम अंगअंग अच्छतन खच्छत न छायेते।नेह नन्दनन्दनको मूंदेहू नमूंदहोत छपत छपाकर न हाथनछपायेते ॥ जुरतिनडीठिहै मुरति मुकरति कहासुरतितुरत कौन दुरति दुरायेते ३ मोसोंतूदुरावति है काहेको सयानी करितुरति की सुरतिनछपतछपायेते । कंचुकी कसनिटूटीनखछतछाजतहै ओठनमेंरद ओपलक पीकलायेते ॥ माधव कहत टूटेहार औअलकखुलीपलकनछाई अलसाईहैजगायेतें । भरतउसासरही नैननवायरही मनसकुचायरही लाजनलजायेते ४

अथकुलटा दोहा ॥ जोअनेक नायक चहै नायकसों है चैन। कुलटा तासों कहतहैं सजैरैन दिनसैन ॥ कवित्त॥ चंचल दृग अंचल चलावत चलत चाल अंचल उघारिकै हे वंचल सभीकरैं। योवनके मदरूपमद मतवारीभई घूमति झुकति युवाजनसों हसीकरैं॥ कहै गिरिधारी वह कौतुक कह्योन जात कंकरीके लागत सिकोरी नाकसी करैं। डोलति बजारन बजारन फिरति बाल हेरनमें जारन हजारन बशी करैं १ छिनुक दुवारे छिन आवत ओसारेछिनचौवारे नैनसैनन सजतहै। और गहनेन के गहँक को गनावैं जाकी आठहु पहर क्षुद्रघंटिका बजत है ॥ उपपति मंडली के मंडल की मंडति सुरतिके चमंडनिते नेकुनाजरतिहै। नैनमदछाकीरीति देयेकरिजाकी केती सासहू सजाकीपै कजाकी ना तर्जतिहै २ योवन नवेली अलवेली रूपमानभरी हँसत गवेली गोप ग्वालन सों जायकै। एकन बुलावै एक सैनन चलावै एक नैनन रिझावैंगकरहै उर लायकै॥ हेरत चलतअंग कोरन कटाक्षकरि अंचल उघारि दीन्हीलट लटकायकै। बागवनगैल गैल जातना सखीहू संग लोकलाज डारि कुल कानि बिसरायकै ३ फेरत अनोट पीछे हेरत तिरीछे बाल गैलमें करत फैल छैलको दिखायकै॥ बात कहिबे के मिस सजनी कोठाढ़ी करै रजनी मिलाप को ठेकानो ठहरायकै॥ भनत कवींद्र साहुननँद के आगे ऐसीसूधी ह्वै रहत मानोरूधाहै उपायकै। नैननके डोरेबांधियो

बनके जोरे मनलेतहै मरोरे कुचकोरे दरशायकै ४ अथ मुदिता ॥ दो० ॥ मुदितहोयजो देखिकै सुनिचित भावति बात। मुदितातासेंकहतहैं जेकबिमतिअवदात॥ कवित ॥ तटबंशीवटके कलिन्दीके निकट मनमोहनीखबरिपाई नन्दकेनँदनकी । सांझसमययमुनामें दीपकप्रकाशनको शासन बधूकोदियो सासुयों सदनकी ॥ कहैगिरिधारी सुनिबातईमि फूलेगात बरणिन जातयह महिमामदन की । अँगिया दरकिगईछतिया फरकिगईतियाकीसर-रकिसरफूंदी अंगदनकी१सासुरेकी मालिनि अशीसकै खहागभागपहिरायो चैंसरचँबेलीकोउनतही । रावरे महल परोस कोस द्योसबीतै वाकेमोहिंफूलन चुनावति चुनतही ॥ सुचित सकेतभौ निकेतके निकटसर मानोसुख वृंदमन्द गुनमि गुनतही । माइकेकी बिरह की जरदी रदीकेमुख लाली चढ़ी बालके खुशालीके सुनतही २ वृन्दावन वीथिन बिलोकि न गईहैजहां राजतरसालवन तालरु तमालको । कहैपदमाकर निहारतबनोईतहां नेहनको नेमप्रेम अदभुत ख्यालको ॥ दूनोदूनो बाढ़त सुपनेकी निशामें अहोआनंद अनूपरूप काह ब्रजबालको । कुंजते कहूं को सुनो कंतको गवन लखि आगमन तैसो मन हरन गोपालको ३ नाह परदेश ताके ढिगजाइबेके काज साइत शोधाय शुभ पण्डित बोलायकै। सुन्दर नक्षत्र बरयोगऔकरन तिथि चन्द्रजानि सासुहे सुमंगल सजायकै ॥ माधवकहत चलीगेह ते कछुकदूरि आयमिलो कंतजो विदेश रहो

छायकै। मनमें मुदित भई लौटिनिज धाम गई हियरे हरषिउर आनँद बढ़ायकै ४ अथअनुसयना ॥ दो० ॥ मिटो बिलोक केलिथल पियसों जहां मिलाप। अनुसयना तासों कहत होय हिये सन्ताप ॥ कवित्त ॥ गुंजत मधुप बैठ मालती लतान पर बेला की सुगंध बहै परस समीर की। डहडहीबेलीबन फैली फूलबरषत लहलहीलहरि वायमुनाके नीरकी ॥ सुमिरि सकेत कुंज नयनन प्रवाह बाढ्यो सखी समुझावै नेक धरत न धीर की। आईहै बसंत ऋतु कोकिल कलापी पापी बोलत पपीहा कै धौं मैन उपचीर की १ सूने घर परस परोसी के सुजान तिय आई सुनि सुनिकै परोसिन मनो अराति। कहै पदमाकर सु कंचन लतासी लचि ऊंची लेति सांस वा हियेमें त्यों नहीं समाति ॥ आय आय जहांतहां बैठि उठि जैसे तैसे दिनतो बितायो बधू बीतति है कैसे राति। ताप सरसानी देखै अति अकुलानी जऊ पति उरआनी तऊ सेजपै बिलानी जाति २ आई ऋतु पावस अकाश आठो दिशन में सोहत स्वरूप जलधारन की भीरको। मतिराम सुकबि कदम्बन की बास युत सरस बढ़ावै रस परस समीर को ॥ भौन सों निकसि वृषभानकी कुमारी देख्यो ता समै सहेटको निकुंज गिरो तीरको। नागरि के नैननमें नीरको प्रवाह बढ़्यो देखत प्रवाह बढ़्यो यमुना के नीर को ३ भयो पतिझार पतिझार में उघारि गयो हतो जौन केलि कुंज कालिंदी किनारा मैं। कहै गिरिधारी ताहि

देखत बिहाल भई बाल थहरानी मुक्ताहल ज्यों थारा में॥ छीटवारी कंचुकी कलित कुच कोरन में लोचन ते आंशू गिरे उपमा बिचारा में। ओढ़े मेघ डम्बर बघम्बर अनूप मानो शम्भु के स्वरूप है नहात छिन्नधारा में ४॥ अथ गणिका॥ गणिका तासों कहतहैं जासों धन सोंप्रीति। नृत्य गीत रतिकी कलनि कलित कोककी रीति॥ कबित॥ पै जार जरी की इजार पैन्हे ओढ़े पटनायक हजारमें बजारमें सुहाईहै। कहै गिरिधारी मृदुहसनबिलासनसोंआसनसों कौनवसहोतरसकाईहै॥ रीझिरीझिदेदेधन धनीनिरधनीभये तहांजरजातिजहां सम्पतिसवाईहै। क्योंनयाकेचलोआवैकंचनउलीचोपा हिकंचनकर्चारिबिधि कंचनीबनाईहै १ सोहनीललित देशी गूजरी सुघरबनी सारीसुबासारी जरीपूरबी किनारीहै। सिंदुरासीगमनबहारप्रति अंगनमें सारगसीकू कति बिलोकि मेघधारीहै॥ पूरिआये नैननीर आनँदको सिंधुमानों देखि नटनागरीको महाछबि भारी है। ईमन धरेहै हट निपट धनासिरीको लेनमाल वाकोतियांपियापै सिधारीहै २ लाललाल पांयनमेंकैसे जरकसी लसीहैासमाल लीबेको बहार जाके जीपैहै। घेरदार पाइचेई जार कमखाबतामें पैन्हि पीत कुरती रतीको रूप लीपैहै॥ ग्वालकवि उरजउतंगनपै आंगी तंग ओढ़नी हुरंगभुकी आंखैं सरसीपैहै। सोनेकीसिरोसी बिजुरीसी निसरीसी वह चंदते चिरोसी दीसी बैठी कुरसी पैहै ३ आरससों आरत सँभारत न भीग्र

पट गजब गुजारत गरीबनकी धारपर । कहै पद-
माकर सुगंध सरसार वैसे बिथुरी बिराजैं बार हीरन
के हारपर ॥ छाजत छबीले छितिछहरि छराकी छोर
भोर उठिआई केलि मन्दिरके द्वारपर। एकपग भीतर
सुएक देहरी पैधरे एककर कंजएककरहै किवाँरपर४
अथअन्यासम्भोगदुःखिता ॥ दो० ॥ आनतियातनपियाके रति
केलक्षणलेखि। अन्यसुरतिसेंदुःखिताबरणतसुकविविन
शेषि ॥ कवित ॥ याही को पठाई बड़ाकाम करिआई
बड़ीतेरोहै बड़ाईलखो लोचन लजीलेसो। सांचीक्यों न
कहै कछुमोको किधों आपहीको पाई बकसीसलाई
बसन छबीलेसो ॥ मतिराम सुकबि संदेशो उनमा-
नियतुतेरे नखशिख अंग हरष कटीलेसो । तूतौहै र-
सीली रस बातन बनाय जानै मेरेजान आईरस राखि
कै रसीलेसों १ बोलतन काहे येरी पूछेबिन बोलों
कहा पूंछतहो काहेभई स्वेद अधिकाई है। कहै पद-
माकर सो मारगके गये आये सांची कहमोसों आजु
कहांगई आईहै ॥ गईआईहौ तो पास सांवरे के कौन
काज तेरेलिये ल्यावनको तेरीये दोहाई है। काहेते न
लाई फिर मोहन बिहारीजूको कैसे वाहि ल्याऊं जैसे
वाको मनल्याईहै २ कमल बदन कुंभिलानो काहे श्रम
बिंदु ग्रीषम दुपहरीतपन सरसाईहै ॥ पीतपट कैसोतेरे
कंतबकसीस दीन्ही धीरेक्यों बचन मोहिं मोहनबका-
ईहै। बारक्यों लगीरी तेरे प्रेमकी कहानी कही अ-
रुन कपोल काहे केमार लगाई है ॥ भूषण अभंगका

हेदौरिकै संदेशा लाई श्यामतनभाई आली आली दुख पाईहै ३ येरीदूती कहेमेरी ओरते तू गईहुती मेरोयों न भई भई आपनेई काजकी। कहैगिरिधारीकत्तकरत दुराव नहीं दुरत दुराये द्युति सुरति समाज की॥ मेरे जान केलिकरिआईहै कन्हाईजूसों लाईहैहजारनकी मौजशिरताजकी। सारी जरकसी कसी अँगिया कि नारीदार बकसी बिशद बकसीस ब्रजराजकी ४॥ अथप्रेमगर्विता॥ दोहा॥ जोतियपियके प्रेमको जाहिर करै गुमान। प्रेम गर्विता होयसो बरणतसुकबि सुजान॥ कबित॥ मेरेहँसे हँसतहै मेरे बोले बोलत है मोहींको जानत तनमन धन प्रानरी। कबि मतिराम भौंह टेढी किहे हाँसिहू में छोड़िदेत बसन भुषण पानी पान री॥ मोते प्रानप्यारी कोन औरकोऊ कहातेसोंरिस करि कतिकहु कहाको सयानरी। मैन कामिनी के मैनकाहूके न रूपरीझै काहू के सिखायेसखि आनो मन मानरी १ जोहूमैं कहत सोई करत प्रमान पिय वाकी डीठि मेरेसंग लागिसी फिरतिहै। मेरेहँसेहँसत उदासते उदासहोत नेकरूसिरहैा पानीपानना सोहात है॥ कौन गुनरीझे मैनजानो कछूरसभाव कैधैंा मेरे भागकी बड़ाई ठहरातहै। कुशलयों बार बार घूंघुट उघारि देखै चंद्रज्यों चकोरनको मन ललचात है २ मेरेहै रहत नित मोहींका चहत चित औरयेही तूनसों नहित हितवतिहै। कहै गिरिधारी अनरसहूमें रसहूमें कैसहून तहँ रसरीति रितवतिहै॥ मेरी मुसक्यानचारु

चंद्रिकाको पानकरि आनँद बिनोदके बिलास बित वतिहै। छोड़त न रैनिदिन मेरेसुख चंद्रओर पीतम के चषन चकोर चितवतिहै ३ मेरोपति मेरे पी अधीन निशिदिन रहै मेरीओर देखिनित मन हरषतहै। मेरी प्रीति रीतिकी कहानीकहै लोगनसों मोहिंछाड़ि दू-सरी न नायका चहतहै॥ माधव कहत मोसों कोककी कलानकरि मोद उपजावत रिझावत रहतहै। जैसी भाग मेरीतैसी औरकी न हेरीब्रज बनिताघनेरीभागि शालिनी कहतहै ४॥ अथरूपगर्विता॥ दोहा॥ आपुइअपने रूपकी जोतिय करै बखान। रूपगर्विता कहतहैंजाके रूप ग्रमान॥ कवित्त॥चंद अरबिंद बिम्ब बिद्रुम फणि न्द शुक कुंदन गयंद कुंदकलो निदरति है। चम्पा सम्पा सम्पुट कदलि घनश्याम कहा कुमकुमकोअंग-राग अंगन करति है॥ कोकिल कपोत पिक पल्लव कलिंदीघन दरके निरखि दास्यो छतियां बरति है। मेरे इन अंगनकी नकल बनाई विधि नकल विलोके मोहिं नकल परतिहै १ चंद्रमुख अधर निरखि हीरा दंतनको सीपहि निदरिसोन मुकता प्रकासेहै। बारन से बार चक अरुझक कंजखंज शुकआदि नासिकाते रहत उदासेहै॥ मेरेसब अंगनकी समता न पाई तासों कहै परसाद सबै दुखके प्रकासे हैं। कोऊ नभवासी कोऊ भयेथलवाशी जायकोऊ बनवासी कोऊ जल में निवासेहैं २ बैठीहुती जाय दुरि दीपन में आयो तहां जाहितू कहो करति बीर हलधरको। भागीहैं डेराय

करि भवन अंधेरेलखि निपट छ्वानकान्ह आनिगहो करको॥ दीपति हमारी या हमारे साथकीन्हो छल दीन्हो जो बताय यहभेव घरघरको। दौरि दुरिवे के काज दीपक बुझायो सोतौ गाहक भयोरी येरीआप नेई गरको ३ उत्तर घनेरे करिरहौ रुख फेरे तिहूं घन श्यामघेरे घरघरिहू घरीरहे। कहैगिरिधारी सुंदरहौ मुखचंद चारु तापर चकोरनकी चारचरि खरीरहै॥ गातनमें कबहूं सुवासना लगाईतहूं आसपास अलिन कीअवलिअरीरहे। रैनिदिन अंगनकी दीपतिदिपति नेक छिपति छिपायेते न बिपति परीरहै ४॥ अथमान वतो। दोहा॥ करैईरषा दोयसों जोनायकसोमान। मान वतीतासों कहतजेकबि सुमति सुजान॥ कबित्त॥ मेखी ह्वै रहीहै सो वृषभ गतितेरी आली मिथुनके काज को बिलम्ब कहाकीजिये। करक मिटाउ आछे सिंह के चरनधाउकन्याके सुभाउसो बिशेषितजिदीजिये॥ तुलातौअतुलरूप वृश्चिककोबिषछाडि घनघनश्याम जूके चरन गहीजिये। मकर न कीजै आछे कुम्भ के गुननह्वैके मीनमन मगनहोकै प्रेमरस पीजिये१तौलौं होंनबोलो जौलौं चातक मयूर बोलै मानके मरोरनैन कोरहन खोलीमैं। खूबिरही खूबी खसखायकी लहर दार शीतल समीर डोलै तनक न डोली मैं॥ कहत नेवाज मैनमन में उमगि आयो फूलिउठे उरजउतंगयुग चोलीमैं। कूकिउठी कोयल कसायनकहूं ते श्याम देखि घनश्याम घनश्याम तोसों बोलीमैं २ येरीगाय-

ज्ञायातुमोहे न गोपजाया गोपजातिक्योंछिपाया गोप
जातिकीजे भंगना। हूजे गोपजाति क्यों न हूजे गोप
जातिक्यों न हूजै गोपजाति गोपजाति लीन्हे संगना॥
मेटेगोप जाति तनभेटे गोपजाति उरफेटे गोपजातिधन
सिंह यामें ढंगना। नेरवीतू अलंगना जू चाहेदेवअंगना
सो टाढ़ीतेरे अंगनापै तेरे एकोअंगना ३ आयोहेसयान
पन गयो न अयानतऊ नितउठि मान करिबेकी टेउ
पकरी। घरघर माननीय मानतीमनायेतेवै तेरी ऐसी
रीति सोतो काहूमें न जकरी॥ कविसतिरास प्रयाम
रूप घनप्रयामलाल तेरेनैनकोरओर चाहे यकटकरी।
हहाकै निहोरेहून मानती हरीननैनी काहेको करतहठ
हरिलकी लकरी४॥अथपुरुषवियोग॥ कबित्त॥गाइहैं मलारै
औजनाइहैं हियेमेंछकि छाइहैंछिगुनीकुंज कुंजहीके
कोरेमैं। कहैपदमाकर पियाइहैं पिआलामुख सुखसो
मिलाय हैं सुगन्ध के झकोरेमैं॥ नेह सरसाइहैंसि-
खाइहैं जोसावनमें पायहैं परीसों सुखसैनके सरोरेमैं।
उरउरझायहैं हियेसों हियलाइहैं झुलायहैं कबैधों
प्राणप्यारीको हिंडोरेमैं १ राधेकी रहनि सुनिदहनि
दहीहै देह नेहकैसे निरद नयन नीर बरसत। सांवरी
सी मूरतिमैं कांवरीसी परिगई तांवरीसी आय तहां
श्रमबुंद बरसत॥ आसन ते बाइबकी ज्वालसी जरन
लागी झरपि झरपिझूमि दांवरीसी झरसत। आंखें
खोलिबोलिकह्यो ऊधोजू तिहारीसोंह मेरोब्रजचलि-
बेको अंगअंग तरसत २ गायबे बजायबेकी चरचा

चलावै कौन छोटेछोटे छोहरन खेलबो बिसरिगो। सबपुरबासी गहे रहत उदासी खोजहांसीको सबनके मुखनसों हेरायगो॥ सबहीके सुखकोदवैया महिपाल सो शकुंतलाके शोचके समुद्रमें समायगो। नारि औ पुरुषर्मिलि सबही बिसारयोसुख सगरे नगरमेंनिगोड़ो दुख छायगो ३ कुंजघनी घनसे निकसि दामिनीसी बाम कुटिलकटाक्षनसों रीतोतनकैगई। मेरेहिय भूमि प्रेम सलिल समोयकरि इन्दीबरनैनी बीज बिरहकेबै गई॥ सुधि बुधिगई तनबियसों बगारिगयो दुखन की मोट शिरपर मेरेदैगई। जानत नकोहै कौनकीहैकहा नाम वाको डारिकै ठगोरी मन मेरो हरिलैगई ४॥अथ पुरुषमान॥कवित्त॥ नंदलाल जादिन सों रोस करिगये मोसों तादिनसों हासकरि आवैयहिटोलैना। कहैगिरि-धारी कबौं कुंजकी गलीमेंजाय मुरली बजाय गीत गावत अमोलै ना॥ येठोई अटानसों अरेठोइ रहत आली करत सनेहकी कलानकी कलोलैना। रहैअन बोलै भेदमनको न खोलै महामान भरो डोलै हाय मोसों हँसि बोलैना १ मानकरि बैठे बनमाली बिन काज आज ऐसीकछू चूक सखीमोपैतौ परीनहीं। कोटिन उपाय करि बिनती अनेकभांति राति सबगई मेरी एकतौ सुनीनहीं॥ माधव कहत कौन करिये उपाय आली दीजिये बताय अबएक तौ चलीनहीं। पैयां परों बीरमैं बलैयालेबो तेरीचलो लाइये मनाय मनधीरतैं धरैनहीं २ अबला अधीर बुधि कहाजानै

रसभाव तुमतौ सुजान ऐसोमान धरियतुहै। ऐसोबोल
बोलो जैसो बोलियतु बलिजाउखेदेकहूं पक्षिनकेपाछे
परियतुहै॥ कीजे सनमान अरु खैयेपान प्रानप्यारे
बिना जलयान कैसे सिंधुतरियतुहै। जाकेलिये मोसी
हाहा करिकै परतपाँय तासों हरि अनरसकी बात
करियतुहै ३ खेलत हँसत पतिपतिनी सुसेजपर अति
रसबस भये आपसमैं बाढ़िकै। बातहीके मध्यकछु
बाल अपमान कीन्हो लालरिसिवाय करवटलीन्ही
डाढ़िकै॥ प्यारी परबीन तबऐसी चतुराईकरी छाती
सों लगाय पीठिकसी अतिगाढ़िकै। श्रीफल सुफल
बिबि तोंबरीके भायकुच पियहिय रिसकी कसक
लीन्ही काढ़िकै४॥ अथदानवर्णन॥कबित्त॥ सम्पतिसुमेरुकी
कुबेरकी जोपावै ताहि तुरत लुटावत बिलम्ब उरधा
रैना। कहै पदमाकरसो हेमहै हस्तिनके हलकाहजा
रनके वितरबिचारैना॥ गंज गजबकस महीपरघुनाथ
रावबाहीगज धोखे कहूं याहूंदेडारैना। ताहीतेगिरिजा
गजाननको गोयरही गिरितेगरेतेनिजगोदतेउतारैना १
कछुदिन बीते अब बासर रहैगोबना चकही बियोग
के बिषाद नारखतहै। रहैगो संयोग रोज रोज यहि
भांतिन सों छपीछप जैहै छिनछिन परखतहै॥ राजन
के राज महाराज श्रीटिकैतराय करनसो जाकेहेम
धारबरखतहै। बारिसुरसाखीदानरीतिदेखिजाकी मेरु
रहैगो न बाको चक्रवाकीहरखतहै २ कासीसोंनबास
रामदूतसों न दास कालत्रासरसों न त्रास न सुपंथ संतसा-

थसें। हंससों न छान हंस बंशसें न बंशआन अन्नसें न दान हालहुकुमी न हाथसें॥सिंहसें न रनी श्रीकुबेर सें न धनीशैल मेरुसों दुनीहै न उत्तमाङ्ग माथसों। पानीगंगपाथसों न ज्ञानी गौरिनाथसों न मानी दशमाथसों न दानी बिश्वनाथसों ३ बकसि बितुराड दीन्हे झुराडनके झुराडनृप सुराडनकी मालय त्यों दईहै त्रिपुरारीको। ग्रामदीन्हे धामदीन्हे उदक अरासदीन्हे षोडश न दानजगतीके जीवधारीको॥कहैपदमाकर करोरिनके कोशदीन्हे भीतिन भरोशदीन्हे ऐसो उपकारीको । राजाजैसिंहने दईनादोयबातें एक शत्रुनको पीठि और दीठि परनारीको ४॥अथयशबर्णनम्॥कबित ॥ कैरवसें कुन्दसों कपूरसों कलानिधिसों कागदसों कासमों कपाससों निहारीहै । फाबिरही फटिकसों फेनुसें फोहारासम उज्ज्वल तुषारासम तारासम तारीहै ॥ हीरा हर गिरहंस हारसे चमेलीसम चांदीसम चटक चहूंधा चारुभारीहै। मोतीसम क्षीरसम बीरराजा रामचन्द्र फैली महिमराडलमें कीरति तिहारीहै १ घोरे सेत सेत जोरे रथसे सुगध सोहै ध्वजा फहरात ज्यों प्रवाह गंगपाथको। बिमल कलानिधिसों बैठो अवलोकिभयो बिसमै कहातो पातरपनके साथको॥ पूछो अजवेश तुमकोहो कितजैहो उन टेरिके सुनायो बड़ो बचन सनाथको। क्षीरधितें आवत छपाकरके पासजात हैंतो मैं सुयशबीर बाबूबिश्वनाथको २ प्रजाकी समय में एक कौतुक लखेउँ जुआज सुनो जैसिंह सब सुखन

को हेतहै। शुचिसों सुचित्त ह्वैकै पूज्यो ब्रजराजै प्रभुदेख्यो पक्षिराजै चलि जैबेको निकेतहै॥ ताहीसमय रावरेको सुयश सुनायो कहूं भयो प्रयामतन सेत बसन समेतहै। झझकि झझकि ताहि देखि देखि हालय देखो गरुड़ गोपालय आजु चढ़न न देतहै ३ इन्द्रिन ज्यों हेरत फिरत गज इन्द्र अरु इन्द्रको दनुज हेरै दिगप नदीशको। भूयश भनत सुरसरिता को हंस हेरै बिधिहेरै हंसको चकोर रजनीशको॥ साहितनै सरजायों करनी करीहैजामें होतहै अचंभो कोटि देवयो तेतीसको। पावत न हेरेतेरे यशमें हेराने निज गिरिकोगिरीशढूंढै गिरिजागिरीशको४॥अथसूमवर्णनम् कबित्त॥ दर्दरो देखतकै दिलको दरद हरै देवैकोहजार लोग लाखनको टारोतो। गर्जीबदारै सरदारै दारैसोंपिदेतो दुगुन करै को सकै ब्याजते बिचारोतो॥ सुकबि सुबंश कहै सूमकहै सूमनिसों आजुबड़ो स्वप्नमें कलंक उरधारो तो। आगिसी लगीथीभागिहतीबाल बच्चनकी जागि ना परोतो मैं रुपैया देयडारो तो १ बांधेद्वारकाकरी चतुरचित्त काकरी सो डंसिरिट्टथा करी न रामकी कथाकरी। पापकी पिनाकरी न जानै नाक नाकरी सोहारिल की नाकरी निरंतहीननाकरी॥ ऐसी सूमता करी नकोऊ समताकरीसे। बेनीकबिताकरी प्रकाशता सुताकरी।देवअर्चा करी न ज्ञान चर्चाकरी न दीनपै दयाकरी न बापकी गयाकरी २ जाकीहै अधेलो चारिपावलो दुबन्नीआठ तामेंपुनिदे-

खे आना सोरह लखातहै। बत्तिस अधन्नी जाकीचैां-
सठ पवन्नी ताकी एकसे अठाइस जामें धेला सरसात
है॥ इकरा विचारो हैसैछप्पन सुदेशायेजू पांचसै सु-
वाराजामें दमरी लखातहै। सबते कठिनहै या वापते
पियारो भैया रूपेको रुपैया दैया कापै दयोजातहै ३
पढ़नन देतहै कबित्त बाजे भावन जू बाजे चुपचाप
सुनि नीवसी अचै रहे॥ बाजे दशबीस गूढ़ पूछि हि
ष्ट कूटकन मूढ़शठ साखिन के चरचा मचै रहे। बाजे
अफ सोसकरें बाजे रहिबोसभरैं बाजेदे भरास दरबार
में नचैरहे। बाजेसूम सूकादेत पाथर लगाय छाती बाजे
सूमसाहेब सुपारियों पचैरहे ४॥ अथकृपाण वर्णनम् ॥ ह
रिचक्र बेली शिवशूलकी सहेली कैधैां कैधैां अलबे-
ली है नवेली महाकाल की। कैधैां बलदेवके मुशल
कीहै मौसी कैधैां माताहै प्रचण्ड कालदण्ड बिक-
रालकी॥ भृगुके कुठारते कठेठी उतनेही कैधैां बिषकी
बहिन कैधैांकैधैां बज्रबालकी। हरदृग ज्वाल प्रलय-
कालकी करालकैधैांकैधैांकरबाल रामचंद्र महिपाल
की १ रन वनभूमैतो भुजलतिकापै चढ़ी कढ़ीम्यान
बामीते बिषम बिषभरीहै। जारिपुकोडसै सोतो तजैं
प्राण ताहीक्षण गाडुलो अनेक हारे झारे नाहं झरी
है॥ भनत कबिंद्रराव बुद्ध अनिरुद्ध तनै युद्धबीच या
को एक तोहीं बसिकरीहै। तरल तिहारी तरवारप-
न्नगीको कहूंतंत्रहै न मंत्रहै न यन्त्रहै नजरीहै २ चेला
कालकूटकी तचाईतेजबाड़वकी शेषफूंक धवनिप्र-

चएडताइ चढ़ीहै ॥ आईआसमानते कि पाई मानभा समान प्रलयकी बुझाई पानीपैंनधारकढ़ीहै। हरिहर हरके त्रिशूल हरिचक्रहू ते वैरीवंश बधिबेको भलीबि धिपढ़ीहै॥ अबदुल वाहिदके नबीखां तिहारीतेग बज्र के हथौरा काल कारीगर गढ़ीहै ३ दाहन ते दूनीतेग तिगुनी त्रिशूलहूते चिर्लिन ते चौगुन चलाक चक्रचा ली ते। कहैपदमाकर महीप रघुनाथ राव ऐसी शम शेरशेर शत्रुन पैघालीते॥ पांचगुनी पविते पचीसगु- नी पावकते प्रबल पचास गुनी प्रलय पर नालीते। शतगुनी सांपनसहस गुनी आपनते लाखगुनी कालते करोरि गुनी कालीते ४॥ अथमरस्या ॥ खसिगयोशा- न को निशान बैसवारे बीच आजुरथ बैंधि सुरलोक की पथैगयो। कहै शिवलाल समुझावै कौन बानी कहि दूनों महराजनिको जनम वृथैगयो॥ बाबूहरी सिंहतें सिधारे देवलोक तेहिशोक सुखभागिकै पुरा नकी कथैगयो॥ भक्षिलयो कालद्विज गैयन को रक्ष पाल भैयन को कलवन भानुसों अथैगयो १ सुकविच कोरन कोचंद्रमा हेरान्योके सिरान्योभानु सुकृतसरो जनके खानको॥ खसिपस्यो साधुनकी सीमकोसदन कैधौंसागर सुखान्यो सुखशीलता सुधानको। भनतक बीन्द्र भूपखोंची भगिवंत जूझ्यो बैरबांधिबूझै कोतली का तुरकानको॥ खूटिगयो खगन के ख्यालकोश्र खारो कैधौं उखस्यो अक्षैवट अखिल हिंदुवान को २ समुद सुखान्यो कैधौं संतजन मीनन को दीननको देव

दरखत से उखरिगो। पुराय के प्रकाश को अकाश
शशि क्षीणभयो फैलिगो प्रकाशतेज तमपुञ्जभरिगो॥
लीन्हेविश्राम बिश्वनाथ रामधाम आजु सुकृतको
भांडाभूरिभूतलते टरिगो। हरिगो गुनीजनके गुनको
गुमानहाय आजु गुनगाहक जहानते निकरिगो ३
आजु महादीनन को सूखिगो दयाकोसिंधु आजुहीं
गरीबन को सबगथ लूटिगो। आजु द्विजराजन को
सकल अकाजभयो आजु महाराजन को धीरज जो
छूटिगो॥ मौलकबिकहै सबयांचक अनाथ आजु आ-
जुहींअनाथनकोकरमजोफूटिगो भूपभगवंतसुरलोकको
पयानकीन्हो आजुयांचकन को कलपतरु टूटिगो ४
अथषोड़शतुकांत॥ खाती हरयाती रसजाती मदमाती हि-
येकाती सीतगाती टेर बिरही बिघातीकी। जाती लै
किराती मनआती न दयाती न चुपाती तालगाती न
पिराती उतपातीकी॥ पाती केहूं भांती तौ बिसाती
जोपैसाती औ धराती सियराती जो व्यथाती ताती
छातीकी। न्हांती छतजाती मैंनोचाती रोमपाती का-
ढ़िबाती लै जलाती जीभ कोलिया कुजातीकी १ सं-
गति सखानकी बखानकी न मानकी उमिरिके उठान
की सुकौतुक निधानकी। पट्टेफहरानकी दुपट्टे जाफ
रानकी गहनि धनुबानकी कहनि किंदुपानकी॥
लाली मुखपानकी नरेश के ललानकी प्रभामैं उपमान
की अवध कुरबानकी। कुंडल के कानकी कमानभौं-
ह तानकी मिठान मुसिक्यानकी अजब एक बान

की २ बिनगुण मालवारे अधरन लालवारे तिलकन भालवारे शोभासुख सारेहै । गिरिजात नालवारे मूरति बिशालवारे चलन मरालवारे दृगअति धारेहै ॥ कारे रंगवारे प्यारे पीलेपटवारे पूरवीकहै लटवारे तेंने मोहिं दोह डारेहै । वर परवारे चित्तचोर परवारे हुनुमोर परवारे तेरेमोर परवारेहै ३ हारिपै हया न कीन जीवपै मयानकीन दीनपै दया न कीन बापकी गयान कीन । शम्भु अरचा न कीन ज्ञान चरचा न कीन बित्त खरचा न कीन मन फरचा न कीन ॥ वारबधू मानकीन मद्यसदा पानकीन मोहमद कानकीन भजन न कानकीन । भीतको न मानकीन हितसब हानकीन हरिको न ध्यानकीनमाधव बखानकीन४ ॥ दोहा ॥ संग्रह सम्पूरणभई माधवकृतसुखपाय । पंचदेव कीजैकृपा जगतबिदितह्वैजाय १ जोकोऊयाहिग्रंथको पढ़िहैंनर मनलाय । ताहिपुत्रसम्पतिसदा देहैंश्रीरघुराय २ श्री माधवपरसादजू बिरच्योग्रंथपुनीत । संग्रहकियअवलोकिके बिबिधकाव्यशुचिगीत ३ भरोसर्बरस ज्ञानअरु सकलकलागुणभूरि । सरलछंदपरबन्धअति पावनप्रियकबिसूरि ४ जाकेपढ़तहिं जातकढ़ि मनकेसकलबिकार । फेरिऔरभावैनहींपढ़िबोतासुअधार५ तामेंदई-सहायतालिखिबेमेंमनलाय । आद्योपांतसमग्रसोलिपिशिवरतनलखाय ॥ ६ कवित्त ॥ लक्ष्मणपुरीसों दोययोजन सुयाम्यदिशि ग्रामएक उत्तम सिसेंडीसुखदाईहै । ताकेमध्य बरणचार बसत सुजानलोग सोतो राजधा-

नी नरनाहकी सुहाईहै ॥ विरच्यो विचारिग्रंथ संग्रह करीहै एक माधवप्रसाद पद सरलमें गाईहै। लेखक सहायता दईहै शिवरतनलाल दुबे बंशजाये मनलाये शिवपाईहै १ ॥

दो० यंत्रालयमुद्रितकियो जगमेंमहतप्रचार।
होतभयोयाग्रंथको शिवकोकृपाउदार १

इतिश्रीमाधवविलास समाप्तः ॥

मुंशीनवलकिशोरके छापेखाने मुक़ाम लखनऊ में छपा
अक्टूबर सन् १८८८ ई०